Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

Total No. of Pages 44

(स्थापना : 1918)
सभा के संस्थापक : महात्मा गाँधी

हिन्दी प्रचार समाचार

वर्ष : 82
अंक : 3

मार्च, 2018

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
एक प्रति का मूल्य : ₹ 8/-

क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है।
– महात्मा गाँधी

CC-0 In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

गणतंत्र दिवस समारोह, 2018 - केंद्र सभा, चेन्नई - मुख्य अतिथि श्री इल. गणेशन, सांसद, राज्य सभा - कुछ झलकियाँ

हिन्दी प्रचार मंडल, करिवेल्लूर - प्रमाण पत्र वितरण - 18.10.2017

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

वर्ष : 82 अंक : 3

हिन्दी प्रचार समाचार

(राष्ट्रीय महत्व की संस्था, 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' का मुख पत्र)

संपादक

एस. जयराज

प्रमाणित प्रचारक चन्दा .... ₹ 100/-

मार्च - 2018

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras

Phone : 044-2434 1824, 044-2434 8640

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

विषय-सूची

		पृष्ठ संख्या
संपादकीय	....	5
भारतीय भाषाओं तथा साहित्य में सांस्कृतिक एकरूपता	....	7
हे श्याम मेघ (कविता)	....	10
पुस्तक संस्कृति : एक पुनर्विचार	....	14
मलयालम की शान-पात्री, कवयित्री सुगतकुमारी	....	21
भारत की सामासिक संस्कृति को पुष्ट करनेवाले हिंदीतर भाषा के शब्द - 4	....	28
पाठ्य-पुस्तक सूची - अगस्त, 2018	.....	29
हिंदी प्रचार समारोह	....	33
नमूने के प्रश्न पत्र - फ़रवरी, 2018	....	36

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

संपादकीय .....

जल के बिना जग है सून

जल प्रकृति की अनमोल देन है। बिना पानी के जीवन संभव नहीं है। स्वच्छ एवं सुरक्षित जल अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है।

पृथ्वी का दो-तिहाई भाग जल से भरा हुआ है। लेकिन इतना जल होते हुए भी उसमें से बहुत कम प्रतिशत प्रयोग करने लायक है। आज लोगों को एक-एक घड़े शुद्ध पेयजल के लिए मीलों भटकना पड़ रहा है। जल के टेंकर और ट्रेन से जल प्राप्त करने के लिए घंटों कतार में खड़ा रहना पड़ता है। जल संकट हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करता है। मनुष्य मात्र के लिए नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों को भी पानी के लिए मीलों भटकना पड़ता है। बिना पानी से पेड़-पौधे भी सूखते जा रहे हैं। जल की कमी से अनेक कारखाने बंद होने से बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है।

लेकिन इस जल संकट का कारण अन्य कोई नहीं, स्वयं हम (मनुष्य) ही हैं । हम अनावश्यक रूप से तथा अधिक मात्रा में जल का दोहन कर रहे हैं। दैनिक प्रयोग में आवश्यकता से अधिक मात्रा में जल का अपव्यय करने की आदत ने जल संकट को बढ़ा दिया है। अतः आज समय है कि हम पानी की कीमत समझें और जल का संरक्षण करें।

जल संरक्षण आज पूरे विश्व की मुख्य चिंता है और वर्तमान स्थिति में एक अनिवार्य आवश्यकता भी है। यदि समाज का हर एक व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी निभाने लगे तो जल संरक्षण को बल मिलेगा। समाज के एक जागरूक अंग होने के नाते हम सबका कर्तव्य है कि जल संरक्षण को हर स्तर पर प्रोत्साहित करें ताकि जल संकट की समस्या का समाधान संभव हो सके।

जल संरक्षण के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने के लिए हर वर्ष 22 मार्च को **विश्व जल दिवस** मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व के सभी विकसित देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है। सन् 1992 को ब्राज़ील के रियो डी जेनेरो में पर्यावरण तथा विकास के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्व जल दिवस मनाने की पहल की गई तथा वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र ने अपनी सामान्य सभा के द्वारा निर्णय लेकर इस दिन को वार्षिक कार्यक्रम के रूप में मनाने का निर्णय किया। लोगों के बीच जल का महत्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए इस अभियान की घोषणा की गयी थी।

जल है तो कल है। इसे ध्यान में रखकर आनेवाली पीढ़ियों को स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण प्रदान करना हम सभी का अनिवार्य कर्तव्य है।

बूँद-बूँद नहीं बरतेंगे

तो बूँद-बूँद को तरसेंगे।।

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

के. दीनबन्धु,
आई.ए.एस. (सेवा निवृत्त)

प्रशासक/विशेष अधिकारी
द.भा.हि. प्रचार सभा, मद्रास

अपनी कलम से..... 44

प्रिय प्रचारक बंधुओ,

आजकल हिंदीतर प्रांतों में बोलचाल की हिंदी सीखना/सिखाना बहुत ही आवश्यक बन गया है। बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो आज बोलचाल की हिंदी सीखना चाहते हैं और समयानुसार हिंदी बोलना भी चाहते हैं। ऐसे इच्छुक नागरिकों को बोलचाल की हिंदी सिखाकर राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करने और आपसी सद्भाव बढ़ाने का काम आसानी से किया जा सकता है। आज के बदलते माहौल में हिंदी सीखने की ज़रूरत भी है और नागरिकों में सीखने की रुचि भी बढ़ गई है।

सभा द्वारा कम समय और कम खर्च में बोलचाल की हिंदी सीखने के लिए सघन अभियान चलाने से आम लोगों को सभा से जुड़ने का भी अवसर मिलेगा, जो सभा के विकास में सहायक होगा।

सभा के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति मल्लिमठ जी सभा की हर बैठक में बोलचाल की हिंदी पर ज़ोर देते थे। वे चाहते थे कि सभा में एक ऐसा केंद्र हो जो बोलचाल की हिंदी के माध्यम से संविधान की धारा 351 की मूल भावना को आत्मसात करते हुए देश की सामासिक संस्कृति के विकास में योगदान कर सके।

इसी दिशा में सभा अपने शतमानोत्सव वर्ष में हिंदी की मौखिक परीक्षाएँ बड़े पैमाने पर चला रही है। दक्षिण के सभी भाषा-भाषिओं के लिए उनकी मातृभाषा के माध्यम से बोलचाल की मौखिक हिंदी सिखाने हेतु पुस्तकें तैयार हैं। इस विषय में प्रचारकों एवं सरकारी कार्यालयों से भी सहयोग मिल रहा है। हमें बोलचाल की मौखिक हिंदी कार्यक्रम का खूब प्रचार-प्रसार करना है, जिससे दक्षिण के सभी आम जनता तक इस अनूठे कार्यक्रम की सूचना पहुँचे और जो भी नागरिक सीखने के लिए आगे आते हैं, उन्हें तुरंत अवसर प्रदान करें।

निश्चय ही इस कार्यक्रम की सफलता हमारी बड़ी उपलब्धि होगी।

आपका

के. दीनबन्धु

चेन्नै : 600 017.
दि. : 23 .02.2018

कृपया ई.मेल ऐडी दर्ज करके रखें।
Note : e.mail id : kdeenabandu@gmail.com में भेजें।

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

भारतीय भाषाओं तथा साहित्य में सांस्कृतिक एकरूपता

डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'

भारत के विख्यात दार्शनिक एवं साहित्य स्रष्टा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 'साहित्य अकादमी' दिल्ली द्वारा आयोजित एक समारोह में अपने व्याख्यान के संदर्भ में कहा था - 'भारतीय वाङमय एक है जो विविध भाषाओं में रचा गया है।" इससे स्पष्ट है कि भाषायी भिन्नता के बावजूद भी भारतीय सास्वत् की आत्मा एक है। समस्त भारतीय भाषाओं में सृजित साहित्य को हमारी एक अविभाज्य सांस्कृतिक परंपरा का स्त्रोत अविच्छिन्न रूप में दर्शित होता है। कारण यह है कि वैदिक साहित्य से लेकर आज तक भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य में एकरूपता का आदर्श परिलक्षित है। भारत के सभी प्रदेशों की भाषाओं में आठवीं-दसवीं शती तक अपना उल्लेखनीय साहित्य उपल्ब्ध नहीं सिवाय तमिल के।

संस्कृत हो या प्राकृत अथवा भारतीय भाषाएँ सनातनकाल से भारतीय रूप का एक सांस्कृतिक चरित्र बनाती आ रही है। भाषाओं के इस सनातन दायित्व के निर्वाह में दक्षिण की द्रविड़ भाषाएँ, उत्तर की आर्य परिवार की भाषाएँ इन दोनों ने अपने-अपने माध्यम से भारतीय कौम के एक सांस्कृतिक चरित्र को अपनाकर उसे सुन्दर रूप दिया है। इस भारतीयता के कारण ही विभिन्न भाषाओं में संप्रेषण होने पर भी हमें लगता है कि ये सब भाषाएँ हमारी हैं। इसका कारण क्या है? इन्हें सुनते समय हमारे सामने इन भारतीय भाषाओं का साहित्य, संस्कार और सामाजिक चरित्र उजागर हो जाता है।

महाकवि कंबन चाहे तमिल भाषा में रामायण लिखें, तो भी भारतीय दर्शन चितंन को ही अभिव्यक्त करते हैं। तुलसीदास अवधी में रामायण लिखें अथवा महाकवि रंगनाथ तेलुगु में रामायण लिखें चिंतन की इनकी भाषाएँ भिन्न-भिन्न होने पर इनकी रामायण में हमारी भारतीय साहित्य का रूप ही झलकता है। इसी प्रकार बिहारी के दोहे हों, कबीर के पद हों, मराठी के अभंग हो, मीराबाई की ब्रजभाषा के भजन हों या जायसी के पदमावत हों, ये सब हमारे चिंतन जीवन दर्शन और भारतीय साहित्यिक संस्कृति का ही दर्शन कराते हैं।

"भारतीय वाङ्:मय" के नाम से समस्त भारत के लिए वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास, महाकाव्य, नाटक तथा अन्यान्य, ज्ञान-विज्ञान संबंधी साहित्य समाहित है। वैदिक् भाषा से लेकर संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं अप्रभंश भाषाओं में प्रणीत साहित्य समस्त भारतीय भाषाओं के लिए अधारभूत बना रहा। यदि कतिपय भाषाओं के सर्जकों ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय अपनी कृतियों में भले ही दिया हो, किंतु मूल कथानक एक ही रहा।

भारतीय भाषाओं के लिए आदि काव्य महर्षि वाल्मीकी द्वारा प्रणीत 'रामायण' है। इस काव्य का सभी भारतीय भाषाओं में न केवल रूपांतर हुआ, अपितु उन-उन भाषाओं के स्रष्टाओं ने अपनी मौलिक उद्भावनाओं द्वारा अपने काव्य को अधिक सुंदर, प्रौढ़ एवं सरस बनाने का प्रयास किया। साथ ही अपने प्रदेश की परिवेशगत विशेषताओं को मूल कथा के साथ समन्वय करते हुए वहाँ के आहार-व्यवहार, खान-पान, वेश-भूषा एवं स्थानीय कलात्मक अभिरुचियों को भी सम्मिलित कर अपनी कृति को एक नया स्वरूप प्रदान किया। परंतु काव्य के मूल आदर्शों को अक्षुण्ण् रखते हुए अपने पात्रों के चरित्रों के माध्यम से उन्हें और अधिक निखारने का प्रयास किया है। कतिपय रचनाकारों ने अपनी गहरी संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों के द्वारा काव्य की रसात्मकता को अत्यंत उज्जवल बनाया।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने 'रामचरितमानस' को स्थानीय लोक भाषा अवधी में रचने के साथ ही

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

श्रीरामचंद्र के चरित्र को शील, शक्ति एवं सौंदर्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। सती साध्वी सीताजी को नारी के समस्त सदगुणें से युक्त चित्रित कर उन्हें देवी के आसन पर बिठाया। इसी प्रकार लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, केवट गुह, विभीषण, शबरी, जटायु, दशरथ, कैकेयी, रावण, वशिष्ट, विश्वामित्र, परसुराम, जनक इत्यादि चरित्रों को पात्रोचित गुणों से युक्त बनाकर अत्यंत सहजता को पोषण किया। परंतु तमिल में कवि कंबन ने श्री रामचंद्र के चरित्र में देवत्व प्रदान कर अपनी अनुपम भक्ति भावना का परिचय दिया है। पुष्प-वाटिका प्रसंग में कबंन ने 'तुलसीदास की अपेक्षा अपने अद्भूत कल्पना कौशल द्वारा काव्य को अतिशय प्रभावोत्पादक बनाया है। साथ ही विभिन्न प्रसंगों के चित्रण में द्रविड़ संस्कृति के वैशिष्ट्य को प्रतिबिंबित कराया है।

तेलुगु में रंगनाथ रामायण के प्रणेता की गोमबद्दा रेड्डी ने संदर्भानुसार अनेक चमत्कार लोक कथाओं को जोड़कर, कथा सूत्र को अधिक सुगठित एवं स्वाभाविक बनाने का प्रयास किया। द्रष्टांत के लिए पंचवटी में शूर्पनखा का प्रवेश, जम्बूमाली एवं कालनेमी के वृंतात, सती सुलोचना का वृंतात तथा ऊर्मिला देवी की निद्रा के प्रसंग ऐसे सहज, सरस एवं सरल बन पड़े हैं, जो अन्य भारतीय भाषाओं की रामायणों में उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार तेलुगु में रचित 'मोल्ल रामायण', 'भास्कर रामायण', 'रामायण कल्पवृक्ष' इत्यादि रामायणों में अनेक अनुपम प्रसंग एवं उद्भावनाएँ मिलती हैं जो काव्य के सौंदर्य को द्विगुणीकृत कर देती हैं।

कुछ ऐसे ही अनोखे प्रसंग कन्नड़ के "पम्परामायण, कुवेंपु कृत 'रामायण', संस्कृत के "अध्यात्म रामायण', 'अनथ राघव', 'रघुवंश' जैन धर्मावलंबियों द्वारा रचित रामायण, मराठी, गुजराती, ओडिसा इत्यादि भाषाओं में विरचित रामायणों में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जो मूल रामायण से भिन्न होते हुए भी उसकी आत्मा को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं यह बात महाभारत भगवत् तथा अन्यान्य महाकाव्यों तथा पुराणों के संदर्भ में भी द्रष्टव्य है।

दसवीं शती से लेकर पंद्रह-सोलहवीं शती तक प्रायः समस्त भारतीय भाषाओं में प्रणीत अधिकांश साहित्य में या तो संस्कृत के प्रांतों का रूपांतर हुआ है अथवा उन काव्यों से कतिपय प्रमुख आख्यान एवं उपख्यानों को इतिवृत के रूप में ग्रहण कर काव्य रचना हुई है। इससे विदित होता है कि भारतीय वाङ्मय में एक विशिष्ट सांस्कृतिक एकरूपता अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। इस संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि आरंभ से भारतीय वाङमय धर्म परायण रही है। इस कारण से भारतीय भाषाओं में जो कुछ साहित्य रचा गया वह धर्म केन्द्रित रहा। साहित्य में मानवीय संवेदनाओं की गहन व्याख्या होती है। धर्म नैतिक मूल्यों की परीक्षा के साहित्य में मानवीय संवेदनाओं की गहन व्याख्या होती है। धर्म, नैतिक मूल्यों की परीक्षा के साथ कतिपय आदर्श एवं सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है। इसी स्थिति पर उत्तम मानव जीवन के लिए आचार संहिता बनती है।

साहित्य में इन मूल्यों तथा आचार सहिंता के अनुरूप पात्रों के चरित्र का निर्माण होता है। ये आदर्श सभी भारतीय भाषाओं के सृजन के लिए एक प्रकार से मानदण्ड बने हुए हैं। ये आदर्श धर्म के नाम पर मानव समुदाय पर एक प्रकार से नैतिकता के मानदण्ड के रूप में शासित थे। यदि मानव समाज में इन मूल्यों की अवहेलना होती तो उन्हें धर्मच्युत ठहराकर बिरादरी से बहिष्कृत करने की परिपाटी भी रही। अतः साहित्य की संरचना में उपरोक्त मूल्यों की रक्षा के साथ ही साथ उन आदर्शों का प्रतिपादन भी आवश्यक माना गया।

आरंभ में संस्कृत के महाकवियों तथा नाटककारों की प्रमुख कृतियों का भारतीय भाषाओं में रूपांतर हुआ। पूर्व-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिण में विविध प्रकार के मठ एवं मंदिर स्थापित हुए और उन मठों के धर्माचारियों ने देश के कोने-कोने में जाकर शास्त्रार्थ किया। प्रवचन किए और उनके द्वारा परिवर्तित भजन एवं पूजन भी सर्वत्र समान रूप से समाहित हुए। इस प्रकार भारत में एक सामाजिक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्कृति को विकसित करने का श्रेय साधु-संतों,

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

महात्माओं को जाता है। मुगलों, यवनों तथा अंग्रेज़ों के आगमन के पश्चात् फ़ारसी, अरबी, अंग्रेज़ी तथा अन्य पाश्चात्य भाषाओं की रचना प्रक्रियाओं का प्रभाव भी भारतीय साहित्य पर समग्र रूप से पड़ा।

पूर्व में चैतन्य महाप्रभु, पश्चिम में गुरुनानक, नरसी मेहता, ज्ञानेश्वर, नामदेव, संत तुकाराम, दक्षिण में पुरंदरदास, हरिदास, संत त्यागराज, सिहेन्द्र योगी तथा उत्तर में संत कबीर, दादुदयाल सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई इत्यादि ने अपने भजन, कीर्तन, पद एवं साहित्यामृत द्वारा मानव मात्र के हृदय को स्पंदित किया और इस कारण उनका साहित्य एक प्रदेश विशेष न रहकर समग्र भारत का साहित्य बना। परिणामस्वरूप इनका साहित्य सभी भाषाओं में रूपांतरित हुआ। इस प्रकार भावात्मक एवं रागात्मक स्वर पर भारतीय भाषा में समन्वय स्थापित हुआ।

भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने पर हमें विदित होगा कि सूक्ष्म अंतर के बावजूद विषयगत समानता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। विभिन्न साहित्य के इतिहासों के विषय के आधार पर जो विभाजन और काल निर्णय किया गया है उसमें भी थोड़े बहुत वैषम्य के साथ अधिक साम्य दिखाई देता है। प्रत्येक काल खण्ड में विधागत दृष्टि से भी समानता परिलक्षित होती है। जैसे प्रायः सभी भाषाओं का प्रारंभिक साहित्य पुराणों तथा काव्यों के आधार पर हुआ।

एक प्रकार से मौलिकता के बावजूद भी उसे अनुवाद युग कहा जा सकता है। इसके पश्चात प्रायः सभी भाषाओं के साहित्य का वर्ण्य विषय भक्ति प्रधान रहा। एक प्रकार से इस युग में अधिक प्रौढ़ साहित्य का सृजन हुआ है। कवि एवं आचार्यों ने अपनी प्रतिभा का खुलकर परिचय दिया। इसका कारण यह भी है कि क्रमशः जहाँ प्रांतीय भाषाएँ समृद्ध होती गई वहाँ रीति काव्यों की सर्जना के साथ कवियों को अपने काव्य कौशल का परिचय देने का मार्गप्रशस्त हुआ। चौदहवीं शती से सत्रहवीं शती का समय भारतीय भाषा एवं साहित्य के लिए स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

भारतीय भाषाओं के साहित्यों का प्रणयन राजाओं, महाराजाओं तथा मण्डलाधीशों के दरबारों में अधिक हुआ। संस्कृत काव्य का पोषण राजाओं के दरबारों में अधिक हुआ। महाकवि कालीदास आदि इसके प्रबल प्रमाण है। महाकवि कालीदास रचित 'अभिज्ञान शकुंतलम', 'मेघदूत', आदि साहित्य में चर्चित साहित्य है।

साहित्य की एक धारा भारतीय संस्कृति की परंपरा से अनुप्राणित हो सतत प्रवाहिनी रही। इस धारा का साहित्य अधिकाशंतः भक्ति प्रधान रहा है। इस कोटि में तुलसी, सूर, मीरा, संत पोतन्ना, आण्डाल, आळवार, नायनमार, अक्क महादेवी, लल्लेश्वरी, चैतन्य महाप्रभु, स्वाति तिरुनाल, नारायण तथा अन्यान्य संत कवियों को भी इस श्रेणी में गिना जा सकता है। कवि मानव समाज के कल्याण हेतु अपने साहित्य का सृजन करते रहे। तत्कालीन शासकों ने अपने दरबार में सादर इन्हें आमंत्रित करना चाहा। परंतु ये स्वाभिमानी कवि जनता जनार्दन के हित एवं अर्चना में ही अपनी कविता के पुष्प अर्पित करते रहे। इन साहित्य धर्मी कवियों द्वारा रचित साहित्य भारतीय वाङ्:मय का अक्षय भंडार कहा जा सकता है। इस कोटि के साहित्य ने जहाँ भारतीय भाषाओं को अत्यधिक समृद्ध किया वहाँ पर साहित्य संपदा को कालजयी बनाने के साथ-साथ अमरत्व प्रदान किया।

ऐसे संत, भक्त एवं मानवतावादी साहित्य द्रष्टा समस्त भारतीय भाषाओं में हुए हैं और उनका साहित्य प्रादेशिक भाषाओं की सीमा को पारकर सार्वदर्शिक बन गया है। परिणामस्वरूप इन विभूतियों का साहित्य अनेक भारतीय भाषाओं में अनुदित हुआ है। इन साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन करने पर हमें विदित होता है कि हमारी सांस्कृतिक परंपरा किस प्रकार हम सबको एक सूत्र में आबद्ध किए हुए है।

भारतीय भाषाओं के रचनाकारों ने तार्किक दृष्टि से जो साहित्य रचा, उसके कारण जनता में वैचारिक

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

परिवर्तन हुआ। साथ ही भारतीय भाषाओं के साहित्य में सारस्वत साधकों ने अपनी अस्मिता की खोज करना प्रारंभ किया।

गाँधीजी ने राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु देश के समक्ष चौदह रचनात्मक कार्यक्रम रखे। इन कार्यक्रमों के समर्थन में भारतीय भाषाओं में विपुल साहित्य की सर्जना हुई। हिंदी में बाबू भारतेन्दु हरिचंद्र, रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा, नवीन, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, भगवतीचरण वर्मा, सोहन लाल द्विवेदी इत्यादि ने राष्ट्रीय भावनाओं का जन जनार्दन में उजागर किया और उन्हें राष्ट्र-प्रेम के प्रति प्रेरित किया।

इसी प्रकार दक्षिण में सुब्रह्मणि भारती, नामक्कल रामलिंगम पिल्लै, भारतीदासन, व.ओ.सी. चिदंबरम, तेलुगु में गूरजाड़, अप्पाराव, रायप्रोलु सुब्बाराव, दन्दुरी रामिरेड्डी, विश्वनाथ सत्यनारायण, कन्नड़ में कुवेंपु गोपाल कृष्ण, अडिग, मलयालम में तकली, शिवशंकर पिल्लै, बालामणि अम्मा, मराठी में सेनापति बापट, काका कालेलकर, गुजराती में भवेद्चंद्र मेघानी, उमाशंकर जोशी, उडिया में फकीर, मोहन सेनापति, गोपबंधु, नीलंकठ, कृपासिंधु, गोपीनाथ महतो,कालिन्दीचरण पाणिग्रही, पंजाबी में जन्नी हीरासिंह, 'दर्द', गुरुमुख सिंह, मुसाफिर असमी में शंकरदेव तथा माधवदेव, उर्दु में चक्रवर्ति, जोश महिलाबादी, बिस्मल, अकबर इलाहाबादी, बंगला में उपेन्द्रनाथ गांगुली, ताराशंकर बनर्जी इन कवियों ने राष्ट्रीय कविता की सर्जना करके देशवासियों में न केवल देश प्रेम जगाया अपितु उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस कालखण्ड में समस्त भारतीय भाषाओं में अधिकाशतः राष्ट्रीय साहित्य ही सृजित हुआ जो हमारी भाषाओं तथा साहित्यों में एकरूपता का बोध कराता है।

G4, Akshaya Flats, 53, Irrussapa Street, Triplicane, Ice House, Chennai - 600 005.

हे श्याम मेघ

वी. आर. देवयानी

श्याम मेघ प्रतीक्षा है सदा तुम्हारी
मन-मोहक ही दर्शन तुम्हारा
मैं श्यामवर्णा के दर्शन के लिए
सुमुखी राधिका-सी बैठी।
कितने दिन-रात, कितने साँच-सबेरे
बैठती हूँ मोह की वंशी बजा
न देखी तुमने मेरी कलाई भी।
सहे कष्ट अनेक मैंने, फिर भी
दर्शन न मिला और तेरा स्पर्शन भी
सुंदर, तेरा श्याम मुँह
चंदन-सा शीतल और कोमल भी तू।
आओ मेरी स्मृति में अनुदिन
दुख के काँटों में सहती सदा
सुन राग-हर्ष भरा मेरा मन
आशा की रेखा भी अब न देख पाया
आये तुम न लालच में पड़ा
दिया तुमने न शीतल मंद पवन भी
मैंने दिल में जलाया जो राग दीप
बुझाना न चाहती हूँ कभी भी।
मुझे देखकर तेरी स्मृति में
व्यंग्य करते मेघ यह सफ़ेदी
दाह-जल के अभाव में धीरे
मुरझायी ले जाती है क्षण-भर
सुनते न रुलाई पपीहे की
बूँद बूँद पानी मिले वह खुश होता
अमूल्य वस्तु वह जो दुनिया में पाता
सज्जन संगति एक वह ज़रूर
साड़ी हरी तो पहनाओ कल तन में
आए चिड़िया धान भर अपनी चोंचों में।
आइए देव यह धरती धन्य हो
शीतल वर्षा में हो जन्म यह सफल भी।

Retd., Teacher, Parayil House, Cheloor, Irinjalakuda P.O. Thrissur Dt., Kerala - 680 121.

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रिय प्रचारक बन्धुओ!

आप जानते हैं कि प्रति वर्ष सभा के द्वारा 'हिन्दी प्रचार दैनिकी' का प्रकाशन होता है और सभा के चालू प्रमाणित प्रचारकों को इसकी एक प्रति उपलब्ध करायी जाती है।

आशा है कि आप **वर्ष 2018-19** का प्रमाणित प्रचारक चन्दा **₹ 100/-** अग्रिम जमा कर / भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे।

"रजिस्ट्री डाक" से डायरी प्राप्त करने के लिए प्रमाणित प्रचारक चंदा **₹ 100/-** के साथ रजिस्ट्री डाक खर्च मद्दे **₹ 50/-** मिलाकर कुल **₹ 150/-** डी.डी. के द्वारा भेजें। विनती पत्र में **प्रमाणित प्रचारक संख्या** एवं **पता** अंग्रेज़ी में साफ़-साफ़ **पिन कोड़** के साथ लिखें। साथ-साथ फोन / सेल नंबर का भी उल्लेख करें।

आजीवन प्रमाणित प्रचारकों को भी दैनिकी डाक द्वारा प्राप्त करने रजिस्ट्री डाक खर्च **₹ 50/-** अलग भेजने का कष्ट करें।

पुनर्नवीकरण की राशि नियत समय पर अदाकर दैनिकी समक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं।

– प्रधान सचिव

सेवा में

प्रधान सचिव,

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,

मद्रास-600 017.

स्थान .....

तारीख .....

विषय : प्रमाणित प्रचारक पुनर्नवीकरण

सेवा में निवेदन है कि **वर्ष 2018-19** के लिए प्रमाणित प्रचारक पुनर्नवीकरण शुल्क **₹ 100/-** तथा रजिस्ट्री डाक से दैनिकी प्राप्त करने खर्च मद्दे **₹ 50/-** कुल मिलाकर **₹ 150/-** डी.डी. द्वारा भेज रहा / रही हूँ। आवश्यक कार्रवाई करें।

विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

पूरा नाम : ----------

प्रमाणित प्रचारक संख्या : ----------

पता/अंग्रेज़ी में ही लिखें

पत्रिका भेजने का पूरा पता : ----------

---------- (Dt.)

State PIN: ----------

Phone / Cell No. ----------

D.D. No. ----------

Name of the Bank ---------- (P.O.)

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

प्रचारकों से निवेदन है...

केन्द्र सभा के विभिन्न विभागों से संपर्क करने के लिए प्रचारकगण निम्नोक्त फोन नंबरों का उपयोग कर सकते हैं :–

Karyalaya		—	044 - 2434 1824
			044 - 2434 1244
			044 - 2434 8640
General Secretary	(Fax)	—	044 - 2434 8420
	(Resi.)	—	044 - 2434 1266
Exam Department	(Off.&Fax)	—	044 - 2433 2338
			044 - 2434 2338
			81243 33004
Registrar	(Off.)	—	044 - 2433 2094
Registrar	(Fax)	—	044 - 2433 2098
Distance Education		—	044 - 2433 2033
Controller of Exam (P.G.)	(Off. & Fax)	—	044 - 2433 2096
M.G. Vidyalaya (C.B.S.E)		—	044 - 2434 5486
M.G. Convocation Hall		—	044 - 2435 1825
Book Sales Dept.		—	97907 95711
Sahitya, Patrika, City Office		—	7397330224
CCS		—	99402 83829

उपाधि-पत्र प्राप्ति संबंधी नियम

जिन छात्रों ने राष्ट्रभाषा विशारद उपाधि-पत्र प्राप्त किया है, उन्हीं छात्रों को राष्ट्रभाषा प्रवीण उपाधि-पत्र प्रदान किया जाता है। अर्थात् राष्ट्रभाषा विशारद उपाधि-पत्र प्राप्त किये बिना, राष्ट्रभाषा प्रवीण उपाधि-पत्र प्राप्त नहीं किया जा सकता।

अतः प्रवीण उपाधि-पत्र के लिए आवेदन-पत्र भेजने के पहले विशारद उपाधि-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य है।

वर्ष 2018-2019 (अप्रैल-18 से मार्च-19 तक) के लिए जिन प्रमाणित प्रचारकों ने वार्षिक चंदा नहीं भरा है, वे तुरंत चंदा शुल्क ₹100/- केंद्र सभा को भेजें ताकि उन्हें अगस्त-18 और फ़रवरी-19 के परीक्षा शुल्क में अनुदान का हक हो सके।

- पत्रिका सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

प्रचारक कृपया ध्यान दें!

शतमानोत्सव सचिवालय

आगामी सन् 2018 को संपन्न होनेवाले सभा के शतमानोत्सव के उपलक्ष्य में दक्षिण के हिन्दी प्रचारकों की निर्देशिका (Directory) तैयार की जा रही है। इससे संबंधित आवेदन-पत्र आपके पते पर भेजा गया है। प्राप्त हिन्दी प्रचारक वृत्तांत (Hindi Pracharak-Data) आवेदन-पत्र को तुरन्त भरकर (Fill-up) भेजें। अगर आपने इसके पहले आवेदन-पत्र भेज दिया हो तो दुबारा भेजने की ज़रूरत नहीं है।

–सचिव

विभिन्न शुल्क विवरण

पुनः जाँच – उच्च परीक्षाओं के लिए हरेक पत्र	₹ 100/-
पुनः गिनती – प्रारंभिक के लिए हरेक पत्र	₹ 50/-
पुनः गिनती – उच्च परीक्षाओं के लिए हरेक पत्र	₹ 50/-
उच्च परीक्षाओं के अंक कार्ड की प्रतिलिपि	₹ 50/-
विशारद – उपाधि	₹ 750/-
प्रवीण – उपाधि	₹ 750/-
तात्कालिक प्रमाण-पत्र	₹ 100/-
आवेदन पत्र	₹ 10/-
उपाधि–प्रमाण-पत्र एक साल के बाद (अन्वेषण शुल्क)	₹ 50/-
उपाधि–प्रमाण-पत्र चार साल के बाद (अन्वेषण शुल्क)	₹ 250/-
प्रमाणित प्रचारक चंदा – वार्षिक	₹ 100/-
प्रमाणित प्रचारक – श्रेणी परिवर्तन दूसरी से पहली	₹ 100/-
प्रमाणित प्रचारक – प्रान्त परिवर्तन	₹ 100/-

–प्रधान सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

पुस्तक संस्कृति : एक पुनर्विचार

डॉ. अमरसिंह वधान

किसी भी चीज़ को पढ़ने का तर्कसंगत कारण यह है कि हमें इससे सुख, खुशी या आनंद प्राप्त होता है। इस खुशी में कई प्रकार की भावनाएँ, अनुभूतियाँ एवं इनकी रंगतें समाहित होती हैं। लेकिन व्यक्ति वही पुस्तक पढ़े जो उसे पसंद है, उसकी ज्ञान राशि में वृद्धि कर सकती है। लेकिन जब हम किसी परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष विषयों की किताबें पढ़ते हैं, तब किसी भी चयन का प्रश्न नहीं रहता है। कहने का प्रयोजन यह है कि हमें पाठ्यक्रमानुसार ही पुस्तकें पढ़नी होती हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो कुछ लोग अनेक कारणों से पुस्तकें पढ़ते हैं और कुछ लोग इसलिए इन्हें पढ़ते हैं ताकि वे दूसरे लोगों को बता सकें कि उन्होंने अमुक-अमुक पुस्तकें पढ़ी हैं। वे अद्यतन विचारों से स्वयं को लैस करके रखते हैं। यह सही है कि तकनीकी पुस्तकों को पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि होती है और कहानी, उपन्यास, कविता आदि पढ़ने से सुख मिलता है।

एल.ए.जी. स्ट्राँग ने एक मार्के की बात कही है, "पुस्तक एक जीवित व्यक्ति की तरह है। आपको एक मित्र के रूप में इससे अवश्य मिलना चाहिए। यदि इससे कोई अच्छी चीज़ प्राप्त होती है तो उसे सक्रियता से पसंद करें।" असल में, अच्छी पुस्तकों, बेहतरीन लिखी पुस्तकों और सच्ची पुस्तकों को पढ़ने के मूल में वास्तविक बात यह है कि एक बार इनको पढ़कर यदि आपने खुशी प्राप्त कर ली तो आप आनंद के लिए पुस्तकों को पढ़ने में उत्तरोत्तर रुचि लेते जाएँगे। 'ऐज यू लाइक इट', 'ओथेलो', 'मैला आँचल', 'गोदान', 'झूठा सच', 'समय सरगम' आदि कृतियाँ आपको बाँधे रखेंगी। लेकिन यदि कोई पुस्तक आपको कष्ट देती है अथवा नीरस लगती है तो उसे पढ़ना बंद कर सकते हैं। 'हैमलेट', 'पैराडाइज़ लॉस्ट', 'कामायनी', 'सावित्री' और 'आत्मजयी' के पाठकों का स्तर भिन्न-भिन्न किस्म का होगा। याद रखनेवाली बात यह है कि पुस्तक कभी भी पाठक को बाध्य नहीं करती कि उसे अवश्य पढ़ा जाए।

ग़ौरतलब है कि पुस्तकों के साथ मनुष्य की आयु का भी संबंध जुड़ा हुआ है। यहाँ तात्पर्य मानसिक आयु से है न कि शारीरिक आयु से। एक बालक को बाल रचनाएँ पढ़ने में जो खुशी प्राप्त होती है, उसके वयस्क होने पर ये बाल रचनाएँ उसे आनंददायक नहीं लगेंगी। सच यह है कि जैसे-जैसे मानसिक आयु का विकास होता जाता है, वैसे-वैसे पुस्तकों के पढ़ने के प्रति रुचि भी परिवर्तित हो जाती है। परी की कहानियाँ पढ़नेवाली बालिका बड़ी होकर 'एक कहानी यह भी', 'रसीदी टिकट' एवं 'अन्या से अनन्या' को पढ़ने में रुचि लेगी। अल्बेयर कामू ने एक जगह लिखा है, 'किताबें केवल तात्कालिक स्थितियों से पलायन नहीं, उन्हें केवल मनोरंजन के लिए पढ़ा जाता है।"

रेखांकनीय है कि जितना रुचिकर स्वभाव पुस्तकों का है, उतना ही दिलचस्प इनका इतिहास भी है। पुस्तक संस्कृति का इतिहास लिपि के विकास एवं कागज़, मुद्रण, स्याही जैसे विविध आविष्कारों से प्रारंभ होता है। पुस्तकों का प्रारंभिक इतिहास पट्टियों, चीरकों एवं पटेरों के पत्थरों से शुरू होता है। इसके पश्चात् हस्तबद्ध, कीमती और बड़ी पुस्तकें हमारे सामने आईं। पुस्तक का यह क्रमिक विकास आज प्रेस मुद्रणालयों के माध्यम से बड़े-बड़े ग्रंथों में परिवर्तित हो गया है। आज विश्व के प्रत्येक देश में प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों की तादाद में पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। लेकिन पुस्तकों के ये टीले 'ई-बुक' एवं 'ई-जर्नल' के आगमन से अवश्य प्रभावित हुए हैं। नतीज़तन पाठ्य वर्ग एवं प्रकाशित पुस्तकों के बीच दूरी बढ़ी है, अध्ययन रुचि में कमी आई है।

पुस्तक इतिहास की ग़वाही के मुताबिक 'गिलगामेश' महाकाव्य प्राचीनतम लिखी गई कहानी

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

है, जिसे पुस्तक का नाम दिया जाता है। यह 18वीं सदी बी.सी. से पहले चिकनी मिट्टी की पट्टियों पर प्राचीन सुमेरिया में लिखी गई थी। प्रथम चर्मपत्रबद्ध पुस्तकें प्रारंभिक ईसाई गिरजाघरों की बाईबिलें थीं, जिनके प्रमाण चौथी सदी ए.डी. कीडेक्स वेटीकेनस एवं कोडेक्स सिनेटिक्स के रूप में मिलते हैं। इसके काफ़ी समय बाद 1454-1455 में जुआन गुटिनबर्ग ने पहली पुस्तक चल टाइप मुद्रण प्रेस पर मुद्रित की जिसका शीर्षक है 'गुटिनबर्ग बाइबिल'। पुस्तक मुद्रण के इतिहास का एक यह भी गवाक्ष है कि 800 सी.ई. में चीन में मुद्रित 'डायमंड सूत्र' को अति प्राचीन पुस्तक माना जाता है। लेकिन अनुमान है कि यह पुस्तक इस तारीख से पहले मुद्रित हुई होगी। ज्ञातव्य है कि प्राचीन समय में पुस्तकों के संस्करण एक सीमित संख्या में तैयार किए जाते थे, यद्यपि आकर्षित डिज़ाइनों, चित्रों से पुस्तकें मनमोहक होती थीं।

लेकिन यह सच्चाई भी प्रबल है कि इंटरनेट के आविर्भाव, उपलब्ध सूचना के अंबार एवं कंप्यूटर क्रांति से प्रिंट मीडिया के सामने नए प्रश्न, नई समस्याएँ और चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं। मीडिया कार्ययालक, विद्वान, पाठक इस बात से सहमत हैं कि आज समाचारपत्रों, प्रिंट मीडिया के अन्य प्रकारों के समक्ष भी गंभीर समस्याएँ पैदा हो गई हैं। पाठक वर्ग, राजस्व एवं पुस्तकों पर भी इसका असर पड़ा है। यही वज़ह है कि गत कुछ वर्षों से प्रिंट मीडिया के बहुत से रूपों और पाठकों की संख्या में ह्रास हुआ है। इस ह्रास प्रवृत्ति को इंटरनेट ने अधिक तेज किया है। इससे समाचार पत्र युवा पाठकों और प्रौद्योगिकी से जुड़ी पीढ़ी की पहुँच से बाहर हैं। 'द प्रेस कौंसिल ऑफ आस्ट्रेलिया' की 2006 की रिपोर्ट में कहा गया है कि आस्ट्रेलिया में समाचार पत्रों के कुल पाठकों की संख्या में 50 वर्ष से अधिक आयु के पाठकों की संख्या लगभग आधी है। अमेरिका की 'द प्यू रिसर्च सेंटर फॉर पीपुल एंड द प्रेस', जिसे राष्ट्रीय जनमत शोध फर्म भी कहा जाता है, ने अपनी वर्ष 2008 की रिपोर्ट में स्वीकार किया है कि इंटरनेट ने एक नवीन स्रोत के रूप में समाचार पत्रों को मात दे दी है।

यह कोई आकस्मिक नहीं कि प्रिंट मीडिया के पाठकों में भारी कमी आने एवं प्रसार के आँकड़ों में गिरावट के कारण समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों तथा अन्य मुद्रित संप्रेषण रूपों से अपेक्षित आय प्राप्त करने में कठिनाइयाँ पेश आ रही हैं। मीडिया सलाहकार जैक माइर्स की वर्ष 2010 की रिपोर्ट का शोध निष्कर्ष है कि वर्ष 2001 से समाचार पत्रों की आय में 40 प्रतिशत की कमी हुई है। वर्ष 2008 में पत्रिकाओं के विज्ञापनों की आय में भी 12 प्रतिशत से 15 प्रतिशत का ह्रास हुआ है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि हमारे यहाँ इस प्रकार के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि के मानक सर्वेक्षणों एवं वास्तविक स्थिति से अवगत करानेवाले शोध निष्कर्षों की ओर कम ध्यान दिया जाता है।

इस सत्य तथ्य से कोई आन्दोलित हो सकता है कि हमारे देश में लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि में लगातार कमी आई है। लिखने और लिखे हुए को तत्काल प्रकाशित कराने, रातों-रात बड़ा लेखक बनने और पुरस्कार प्राप्त करने की ललक लोगों में अधिक है। जबकि एक मौलिक पृष्ठ लिखने के लिए कम-से-कम पचास पृष्ठों को पढ़ना ज़रूरी है। इधर लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि में आई भारी कमी के कुछ कारण सामने आए हैं। पुस्तक पढ़ना तत्त्वतः एक एकांत क्रिया है। अकेले बैठकर पुस्तक पढ़ने की अनुकूल स्थिति न होने के कारण लोग पुस्तकों से पलायन करते हैं और सामाजिक क्रियाओं को तरज़ीह देने लगते हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि पुस्तकें आसानी से पहुँच में नहीं होती हैं। यूँ तो आप अपने किन्डल पर अपेक्षित पुस्तक को डाउनलोड कर सकते हैं, लेकिन पढ़ने के इलैक्ट्रॉनिक रूप आपको वास्तविक पुस्तक का आनंद नहीं देंगे।

यह भी स्पष्ट कर दें कि लेखक का अपने शब्दों के माध्यम से क्या आशय है, इसे किसी फ़िल्म से नहीं

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

समझा जा सकता। पुस्तक पढ़ने में दिमाग़ की ज़रूरत पड़ती है, जबकि चलचित्र को किसी भी मानसिक स्थिति में देखा जा सकता है। फिर पुस्तक पढ़ने के लिए पूरा समय चाहिए। संपूर्ण पुस्तक को पढ़ने के लिए कई दिन लग जाते हैं। किसी फ़िल्म को आप दो-तीन घंटे में देखकर कहानी का सार समझ जाते हैं। पुस्तक पढ़ना एक मानसिक खुराक है। यात्रा करते समय, प्रतीक्षालय में बैठे हुए अथवा किसी निरंतर किए जा रहे कार्य में थोड़ा अंतराल देकर किसी भी अच्छी पुस्तक की आप दो-चार पंक्तियाँ पढ़ लेंगे तो एक खास किस्म की मानसिक ताज़गी मिलेगी। जिन पुस्तकों को आप पढ़ चुके हैं, उन्हें किसी बुक स्टोर पर जाकर बेच सकते हैं और कम दामवाली पुस्तकें खरीद सकते हैं। लेकिन पुस्तक पढ़ने का अनुभव भी होना चाहिए और इससे आनंद प्राप्त करने की कला भी आनी चाहिए। इस संदर्भ में फ्रांसिस बेकन ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'ऑफ स्ट्डीज़' में लिखा है, "कुछ पुस्तकें पढ़ने के लिए होती हैं, कुछ आत्मसात् करने के लिए होती हैं और कुछ चिंतन करने के लिए होती हैं।" मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि एक अच्छी पुस्तक पढ़ने के बाद आई नींद में बड़े अद्भुत स्वप्न आते हैं। यह सच है कि पढ़ना हमेशा आसान कार्य नहीं है, लेकिन इतना कठिन भी नहीं। यदि आप महसूस करते हैं कि बड़ी-बड़ी पुस्तकों को पढ़कर समाप्त करने का न समय है और न मानसिक ऊर्जा, तो आप ऐसी किताबों का चयन न करें। पुस्तकों का ध्येय तो आनंद या रस लेना है। कहना न होगा कि पुस्तक पढ़ने के लिए एक नियमित आदत डालनी होती है। कुछ मिनट ही पढ़ना, पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित करता है। ताज़्जुब नहीं कि विक्टोरिया काल में महिलाओं में पुस्तकें पढ़ने का ऐसा जुनून था कि रसोई में भोजन बनाते हुए उनके एक हाथ में पुस्तक और दूसरे हाथ में कड़छी (बड़ा चम्मच) रहता थी।

पुस्तक संस्कृति का विकास एक नैसर्गिक प्रक्रिया है और इसका स्वभाव आदान-प्रदान से वृद्धि करना है। दो देशों अथवा दो प्रांतों में लिखी गई पुस्तकों का प्रभाव एक-दूसरे पर पड़ता है, भले ही इनकी रचना अलग-अलग भाषाओं में हुई हो तथा अनुवाद का साथ भी इन्हें मिला हो। संसार में शायद ही ऐसा कोई देश हो, जो यह दावा कर सके कि उस पर किसी अन्य देश की पुस्तक संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है। पुस्तकें एक-दूसरे को देना भी जानती हैं। इनके दरवाज़े सबके लिए बराबर खुले रहते हैं। पुस्तकों ने सदैव आदर्श व्यक्तियों की रचना की है, न कि हृदयहीनों की। पुस्तकों की ज्ञान राशि का जलाशय कभी नहीं सूखता। उसमें सदा ही स्वच्छ ज्ञान जल लहराता रहता है जिसमें शेक्सपियर, कीट्स, शैली, टॉलस्टॉय, एमर्सन, गोर्गी, रवींद्रनाथ टैगोर, निराला, प्रेमचंद, तकषि शिवशंकर पिल्ले रूपी साहित्यिक कमल के फूल खिलते रहते हैं। एक देश में पैदा हुए दार्शनिक, साहित्यकार, महात्मा और वैज्ञानिक अपनी आवाज़ जिन पुस्ताकों में दर्ज़ करते हैं, वह दूसरे देशों में भी मिलते-जुलते मनीषियों को जन्म देती है। ज़ाहिर है कि आदान-प्रदान की यह प्रक्रिया पुस्तक संस्कृति की रूह है और इसी के सहारे वह अपने को ज़िन्दा रखती है।

पुस्तकों में 'सर्व धर्म समभाव' और 'विश्वबंधुत्व' की भावना निहित है। पुस्तक संस्कृति राष्ट्रीयकरण से वैश्वीकरण तक के प्रभाव को समाए हुए है। किसी पुस्तकालय की अल्मारियों में रखी देश-विदेश के लेखकों की पुस्तकें जाति, धर्म, विचारधारा, प्रदेश, रंग-रूप आदि में कोई मतभेद नहीं करतीं, साम्प्रदायिकता की कोई क्रांति अथवा आंदोलन खड़ा नहीं करतीं। धैर्य, शांति, आपसी प्रेम एवं सामूहिकता पुस्तक संस्कृति के रक्त में है। जिस घर में पुस्तकें न हों, वह घर संतानविहीन-सा लगता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी निजी पुस्तक पर गर्व होता है। प्रसंगवश, अपनी बाल्यावस्था से ही अब्रहाम लिंकन को पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन गरीबी के कारण वह पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में असमर्थ था। उसे पता चला कि उसके एक अमीर मित्र के पास जार्ज वाशिंगटन की आत्मकथा की पुस्तक है। लिंकन ने अपने मित्र से कहा, "यह पुस्तक कुछ दिनों के लिए मुझे पढ़ने को दे दो।"

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

मित्र ने पुस्तक लिंकन को दे दी और वह पुस्तक लेकर घर आ गया। लिंकन अपने माता-पिता के साथ लकड़ी और घास-पूस के बने घर में रहता था। एक रात को भारी वर्षा हुई और पानी से मित्र द्वारा दी गई पुस्तक खराब हो गई। जब लिंकन पुस्तक वापस देने के लिए अपने मित्र के पास गया तो खराब हुई पुस्तक को देखकर मित्र ने गुस्से में कहा, "मैं इस पुस्तक को वापस नहीं लूँगा। तुम्हें इस पुस्तक का मूल्य चुकाने के लिए मेरे खेतों में पंद्रह दिनों तक काम करना होगा।" लिंकन ने मित्र की बात मान ली और खेतों में कठिन परिश्रम किया। मित्र ने काम के अंतिम दिन लिंकन को वह पुस्तक देते हुए कहा, "अब आप इसे ले जा सकते हैं, यह आपकी पुस्तक हुई।" लिंकन मन ही मन सोचता आ रहा था कि मुझे गर्व है कि यह पुस्तक मेरी है, मैं इसका स्वामी हूँ। अंग्रेज़ी कवि विलियम ब्लेक अपने अध्ययन कक्ष में रखी पुस्तकों के लेखकों के साथ घंटों बातचीत करता रहता था। उसका विचार था, "पुस्तकें सच्ची और वफ़ादार मित्र हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मैं इनके लेखकों के साथ विमर्श में संलग्न हूँ।"

इतना और कह दें कि पुस्तकों का अधिक अध्ययन करना किसी भी व्यक्ति की बौद्धिक निपुणता है। पढ़ने की गहराई व्यक्ति के मस्तिष्क एवं व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक सिद्ध होती है। वह मानवीय समस्याओं के समाधान हेतु अंतर्दृष्टि प्रदान करती है तथा मनोवृत्ति एवं व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यहाँ तक कि पुस्तक संस्कृति व्यक्ति के चरित्र को भी नए साँचे में ढाल देती है। पुस्तकों से जुड़ना एक विराट सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ना है। पुस्तकें हमें स्वाधीन बनाती हैं और हमारे भीतर की रचनात्मकता को भी रेखांकित करती हैं। इस त्वरित गति से परिवर्तित होती दुनिया में कई प्रकार के विकर्षण उत्पन्न हो गए हैं। फिर भी, हमें पुस्तक संस्कृति एवं अध्ययन की प्रासंगिकता को पुनः नवीन दृष्टिकोण से समझना चाहिए।

Director, Higher Education and Research Centre, 3150, Sector 24 D, Chandigarh -160 023.

शोक समाचार

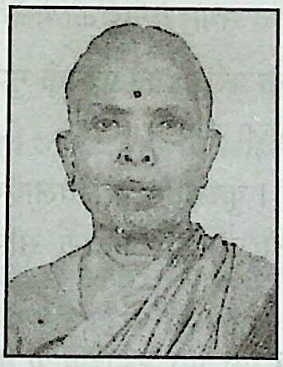

अत्यंत खेद की बात है कि मैसूर की वरिष्ठ हिंदी प्रचारिका श्रीमती **एन. कमलम्माजी** का निधन दि. 13.10.2017 को मैसूर में हुआ।

आपने आजीवन हिंदी प्रचार कार्य में अपने को समर्पण किया।

सारा हिंदी परिवार भगवान से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को चिर शांति दे और उनके शोक संतप्त परिवारजनों को सहनशक्ति दे।

- संपादक

दक्षिण के लेखक बंधुओं से अनुरोध है कि वे **'हिंदी प्रचार समाचार'** एवं **'दक्षिण भारत'** में प्रकाशन के लिए अपनी रचनाओं को भेजें। रचनाएँ टंकित या स्पष्ट अक्षरों में लिखित हों।

- साहित्य सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव सचिवालय
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

शतमानोत्सव मौखिक परीक्षा

प्रिय हिंदी प्रचारकगण,

वंदे। आप अत्यंत प्रसन्न होंगे कि हिंदी प्रचार रूपी राष्ट्र सेवा की हमारी यात्रा के गौरवपूर्ण 100 साल पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर अनेक रूपों में सभा का शतमानोत्सव मनाने का विशेष प्रबंध हो रहा है।

इस सिलसिले में हम दक्षिण के हिंदीतर भाषियों के उपयोगार्थ एक सरल मौखिक परीक्षा सितंबर 2017 से संचालित कर रहे हैं।

चारों भाषाओं (तमिल/तेलुगु/कन्नड़/मलयालम) और अंग्रेज़ी में पुस्तकें तैयार हो गयी हैं। परीक्षा के नियम नीचे दिये गये हैं। शतमानोत्सव मौखिक परीक्षा की किताबें शतमानोत्सव सचिवालय में प्राप्त कर सकते हैं। संपर्क करें 09940283829 पर।

परीक्षा नियम

1. शतमानोत्सव मौखिक परीक्षा के लिए परीक्षा शुल्क रु. 50/- होगा।
2. हर परीक्षा केंद्र में कम से कम 50 परीक्षार्थियों का होना ज़रूरी है।
3. परीक्षा शुल्क रु. 50/- से रु. 10/- प्रचारक का मानदेय होगा। यह रु. 10/- काटकर हर परीक्षार्थी के लिए रु. 40/- के हिसाब से प्रचारक कुल परीक्षा शुल्क केन्द्र सभा, चेन्नई को भेजेंगे।
4. परीक्षा शुल्क प्राप्त होते ही प्रचारक के नाम पर **शतमानोत्सव मौखिक परीक्षा की पुस्तकें** मुफ़्त में भेजी जाएँगी। उसके साथ **परीक्षार्थी नामावली** के लिए फ़ारम भी भेजा जाएगा।
5. पुस्तकों के मिलने के बाद प्रचारक मौखिक वर्ग चलाना शुरू करेंगे। कुल 30 वर्ग चलाएँगे। उसके बाद परीक्षा चलाकर सभा से प्राप्त परीक्षार्थी नामावली को नाम व प्राप्तांक सहित शतमानोत्सव विभाग, चेन्नई को भेजेंगे।
6. परीक्षार्थी नामावली प्राप्त होने के बाद उसके आधार पर प्रमाण पत्र तैयार कर प्रचारक के नाम पर भेजे जाएँगे।
7. जो प्रचारक 500 परीक्षार्थियों को तैयार कर परीक्षा में बिठाते हैं, शतमानोत्सव के अवसर पर प्रांतीय स्तर से उनका सम्मान किया जाएगा।

सचिव, शतमानोत्सव सचिवालय **प्रधान सचिव**

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव सचिवालय
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास-17

द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"हिन्दी साहित्य को दक्षिण भारतीय साहित्यकारों का योगदान"

सभा अपने गौरवमय 100 वर्ष पूरा करके शतमानोत्सव मनाने जा रही है। इस अवसर पर विभिन्न योजनाएँ अमल की जा रही हैं। उनमें से एक है **'द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी'**।

यह संगोष्ठी दो दिन की होगी। शीर्षक 'हिन्दी साहित्य को दक्षिण भारतीय साहित्यकारों का योगदान' रहेगा। कार्यक्रम का विवरण निम्न प्रकार है :

प्रथम सत्र : उद्घाटन समारोह प्रातः 9.30 से 11.00 बजे तक

द्वितीय सत्र : हिन्दी साहित्य को तेलुगु साहित्यकारों का योगदान पूर्वाह्न 11.30 से 2.00 बजे तक

1. हिन्दी समीक्षा एवं आलोचना को तेलुगु भाषी समीक्षकों एवं आलोचकों का योगदान
2. अनुवाद (तेलुगु-हिन्दी, हिन्दी - तेलुगु) के क्षेत्र में अनुवादकों का योगदान (भूमिका)
3. हिन्दी कथा साहित्य को तेलुगु भाषी कथाकारों का योगदान : कहानी साहित्य
4. हिन्दी कथा साहित्य को तेलुगु भाषी कथाकारों का योगदान : उपन्यास साहित्य
5. हिन्दी काव्य को तेलुगु भाषी कवियों का योगदान : काव्य साहित्य

तृतीय सत्र : हिन्दी साहित्य को तमिल साहित्यकारों का योगदान अपराह्न 03.00 से 5.30 बजे तक

1. हिन्दी समीक्षा एवं आलोचना को तमिल भाषी समीक्षकों एवं आलोचकों का योगदान
2. अनुवाद (तमिल-हिन्दी, हिन्दी - तमिल) के क्षेत्र में अनुवादकों का योगदान (भूमिका)
3. हिन्दी कथा साहित्य को तमिल भाषी कथाकारों का योगदान : कहानी साहित्य
4. हिन्दी कथा साहित्य को तमिल भाषी कथाकारों का योगदान : उपन्यास साहित्य
5. हिन्दी काव्य को तमिल भाषी कवियों का योगदान : काव्य साहित्य

चतुर्थ सत्र : हिन्दी साहित्य को मलयालम साहित्यकारों का योगदान द्वितीय दिवस सबेरे 10.30 से 1.00 बजे तक

1. हिन्दी समीक्षा एवं आलोचना को मलयालम भाषी समीक्षकों एवं आलोचकों का योगदान
2. अनुवाद (मलयालम-हिन्दी, हिन्दी - मलयालम) के क्षेत्र में अनुवादकों का योगदान (भूमिका)
3. हिन्दी कथा साहित्य को मलयालम भाषी कथाकारों का योगदान : कहानी साहित्य
4. हिन्दी कथा साहित्य को मलयालम भाषी कथाकारों का योगदान : उपन्यास साहित्य
5. हिन्दी काव्य को मलयालम भाषी कवियों का योगदान : काव्य साहित्य

पंचम सत्र : हिन्दी साहित्य को कन्नड साहित्यकारों का योगदान द्वितीय दिवस अपराह्न 2.00 से 4.30 बजे तक

1. हिन्दी समीक्षा एवं आलोचना को कन्नड भाषी समीक्षकों एवं आलोचकों का योगदान
2. अनुवाद (कन्नड - हिन्दी, हिन्दी - कन्नड) के क्षेत्र में अनुवादकों का योगदान (भूमिका)

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

3. हिन्दी कथा साहित्य को कन्नड भाषी कथाकारों का योगदान : कहानी साहित्य
4. हिन्दी कथा साहित्य को कन्नड भाषी कथाकारों का योगदान : उपन्यास साहित्य
5. हिन्दी काव्य को कन्नड भाषी कवियों का योगदान : काव्य साहित्य

तृतीय सत्र : हिन्दी साहित्य को तमिल साहित्यकारों का योगदान अपराह्न 03.00 से 5.30 बजे तक

समापन सत्र : शाम को 5.00 से 6.00 बजे तक

उक्त संगोष्ठी के विषय पर विद्वानों से लेख आमंत्रित हैं। चयनित आलेखों के लेखकों को संगोष्ठी में आमंत्रित किया जायेगा। लेख भेजने का पता निम्नलिखित है :

सचिव,
शतमानोत्सव सचिवालय,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
तणिकाचलम रोड, त्यागराय नगर, चेन्नई - 600017
मोबाइल : 09940283829

सचिव *प्रधान सचिव*

उपाधि शुल्क विवरण / CONVOCATION FEE DETAILS

राष्ट्रभाषा विशारद

राज्य	2017	2016	2015	2014	2013	2012	2011
आंध्र	750	750	750	800	850	900	950
कर्नाटक	750	750	750	750	800	850	900
केरल	750	750	750	750	800	850	900
तमिलनाडु	750	750	750	750	800	850	900
मद्रास	750	750	750	800	850	900	950

राष्ट्रभाषा प्रवीण

राज्य	2017	2016	2015	2014	2013	2012	2011
आंध्र	750	750	800	850	900	950	1000
कर्नाटक	750	750	750	800	850	900	950
केरल	750	750	750	800	850	900	950
तमिलनाडु	750	750	800	850	900	950	1000
मद्रास	750	750	750	800	850	900	950

1. आवेदन पत्र - रु. 10/-
2. *After Convocation per year Rs. 50/- Search fee with Convocation fees.*

–परीक्षा सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

मलयालम की शान-पात्री, कवयित्री सुगतकुमारी

डॉ. के.ए.पणिक्कर

मलयालम की लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती बी.सुगतकुमारी का शताभिषेक निकट भविष्य में मनाये जानेवाला है। श्रीमती सुगतकुमारी का जन्म सन् 1934 में तिरुवनन्तपुरम में हुआ। उनके श्रीमती वी.के.कार्त्यायनी अम्मा और श्री बोधेश्वरन थे। माताजी संस्कृत की प्रोफ़ेसर थीं। पिताजी ख्याति प्राप्त गाँधीवादी, आज़ादी आंदोलन के सेनानी व प्रसिद्ध कवि थे। इनकी तीन बेटियों में बीचवाली हैं सुगतकुमारी। (बी. हृदयकुमारी, बी.सुगतकुमारी और बी. सुजाता देवी - तीन बेटियाँ)। प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट नेता श्री एम.एन.गोविंदन नायर सुगतकुमारी के मामा थे। गाँधीवाद और कम्यूनिस्ट आदर्शों का 'बहस' घर में हुआ करता था। बालिका सुगतकुमारी गाँधीवाद के पक्ष में थीं। सुगतकुमारी बचपन से ही गाँधीवाद के आदर्शों का पालन करती आ रही हैं।

काव्य सृजन की प्रवृत्ति सुगतकुमारी को 'पैतृक संपत्ति' के रूप में मिली। अभ्यास का रंग लगाकर उन्होंने उसे चार चाँद लगाया। बचपन से ही सुगतकुमारी कविता करने लगी थीं। मलयालम की ख्याति प्राप्त मासिक पत्रिकाओं में उनकी कवितायें प्रकाशित होने लगी थीं।

सुगतकुमारी के पतिदेव श्री एम.के वेलायुधन नायर सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट आफ एजुकेशन, दिल्ली में काम करते थे। दिल्ली में रहते समय सुगतकुमारी ने बहुत सी कवितायें लिखीं।

तिरुवनन्तपुरम के जवहर बाल भवन की ओर से प्रकाशित 'तलिर' पत्रिका की संपादिका के रूप में सुगतकुमारी चिरकाल काम करती थीं।

आप के प्रकाशित कविता संग्रहों के नाम इस प्रकार हैं - 'पावम् मुत्तुच्चिप्पी', 'स्वप्न भूमि', 'मानव हृदयम', 'प्रणाम', 'इरुलचिरकुकल', 'अम्पलमणि' आदि। 'इरुलचिरकुकल' को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। 'अम्पलमणि' को वयलार अवार्ड मिला।

सुगतकुमारी में प्रकृतिवाद सौ फीसदी भरा हुआ है। प्रकृति को आप माता मानती हैं। माता के सारे अंश, उनकी कविता की विशेषता हैं। फूल, हरियाली, सूर्य, रश्मियां आदि को कवयित्री अपने पारिवारिक सदस्य मानती थीं

प्रकृति के अंगों को काटने-नष्ट भ्रष्ट करनेवाले आक्रमण जहाँ-जहाँ हुए वहाँ-वहाँ उस आक्रमण के खिलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए सुगतकुमारी दौड़ आती थीं। 'सैलन्टवाली बिजली पद्धति इसका सच्चा उदाहरण है। प्रकृतिवाद के पक्षपातियों को 'पेड़ कविगण' नाम से, इनके दुश्मन पुकारते थे।

सुगतकुमारी के नेतृत्व में सन् 1983 को सैलन्टवाली पद्धति के विरुद्ध आन्दोलन हुआ। उसमें सफल सिद्ध हुईं। तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने बिजली पद्धति को रोक दिया था। केरल के प्रकृति प्रेमियों को उन्होंने एक नित्य हरित्वन दिया।

पेड़ कवियों की उपाधि गर्व के साथ सिर पर लेने के लिए सुगतकुमारी आदि तैयार हुए। भृगुमुनि के कुचलने के चिह्न को 'श्रीवत्सांक' के रूप में महाविष्णु ने स्वीकार किया था? उसी प्रकार 'पेड़कवि' नाम सुगतकुमारी आदि के लिए मुकुट के 'पोनतूवल'(सोने का पंख) ही है।

पेड़ और पौधे ही प्रकृति की ज़िंदगी की रीढ़ की हड्डी है। उनको पनपाना ही हमारा कर्तव्य है, काटना नहीं। इसलिए प्रसिद्ध कवि अय्यप्प पणिक्कर ने कविता के द्वारा पूछा, 'काटेविटे मक्कले', नाटेविटे मक्कले? काट्टु पुलतकिटियुटे वेरेविटे मक्कले? (हे पुत्रों, वन कहाँ है? हमारा पुराना देश कहाँ है? वन की फुलवारी की जड़े कहाँ हैं? पुत्रों) आधुनिक

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

प्रकृतिनाशकों के खिलाफ़ श्री अय्यप्प पणिक्कर की प्रतिक्रिया उपर्युक्त पंक्तियों में मौजूद है।

सुगतकुमारी चाहतीं तो केरल या भारत के राजनीतिक क्षेत्र में शोभा देनेवाली एक सदस्या बन सकतीं थीं। अनेक राजनीतिक नेता अपने पाश्वर्ती बनने का न्योता, इन महान कवयित्री को दिया करते थे। लेकिन सुगतकुमारी ने उन सब को हताश बनाकर लौटा दिया। एक महान राजनीतिक नेता इस प्रतिक्रिया की तारीफ़ करते हुए कहा 'यही सुगतकुमारी के महान व्यक्तित्व का निशान है'। सुगतकुमारी के आदर्श-पुरुष महात्मा गाँधी हैं।

पद्म विभूषण महाकवि श्री ओ.एन.वी.कुरुप्प सुगतकुमारी का मानस भाई थे। ओ.एन.वी. तिरुवनन्तपुरम पार्लमेंट क्षेत्र में उम्मीदवार थे, जीत न सके।

सुगतकुमारी का मत यह रहा होगा कि राजनीतिक 'बंधन' में फँस जाने की अपेक्षा, अधर्म करनेवाली सरकारों के खिलाफ़ एक 'शुद्धतावादी' के रूप में विरोध करना ही हमेशा अच्छा है।

शायद उन के मन में यह भी एक प्रेरक शक्ति रही होगी कि 'आजकल कोई भी पार्टी हमेशा धर्म का पालन नहीं कर सके।'

सुगतकुमारी सदा धर्म के पक्ष में ही रहीं।

सुगतकुमारी की माताजी, पार्थसारथी के 'वासस्थान' आरन्मुला प्रदेश की सन्तान हैं। सहज रूप से ही सुगतकुमारी में प्रकृति प्रेम व श्रीकृष्ण भक्ति के प्रति लीन हो गईं। प्रकृति व नारी के विरुद्ध होनेवाले सारे आक्रमणों के संदर्भ में अत्यधिक दुख सहनेवाली नारी श्रीमती सुगतकुमारी होंगी।

आप अंग्रेज़ी साहित्य में भी ज़्यादा ज्ञान पा सकीं। मलयालम आपकी मातृभाषा है। भारतीय नारीत्व को ज़्यादा महत्व देनेवाली कवयित्री हैं सुगतकुमारी।

सुगतकुमारी की सेवा, तिरुवनन्तपुरम और कोषिक्कोट के मानसिक आतुरालयों (औरतों के) के विकास के पीछे हम देख सकते हैं। जाति, धर्म, प्रदेश, पार्टी आदि सब की सीमाओं को लांघकर मानवसेवा के लिए आगे बढ़नेवाली सुगतकुमारी की राय से प्रभावित होकर अनेकों ने उनकी संस्थाओं के लिए सहायता प्रदान की। इसके फलस्वरूप उपर्युक्त दो शहरों में औरतें-खासकर मानसिक बीमारियों के संरक्षण के लिए अनेक विकासपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं। 'अभय' उस संस्था का नाम है।'अभय' अत्यंत उन्नति के साथ आगे बढ़े, नाम को सौफीसदी सार्थक बना सकें - यही प्रार्थना हमारी है।

केरल की सबसे प्यारी व लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती सुगतकुमारी के लिए दीर्घायु देने का सौभाग्य जगदीश्वर प्रदान करें। परिपूर्ण तन्दुरुस्ती से आप आगे भी काव्य रचाते रहें और मानव समाज की सेवा करती रहें।

हार्दिक शुभकामनायें - विजयकामनायें।

Retd., Prof.&Social Worker, Sreekovil, Pazhaveed P.O., Alappuzha, Keralam - 688 009.

परीक्षा विभाग की सूचना

हर्ष की बात है कि प्राथमिक, मध्यमा और राष्ट्रभाषा परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों में परीक्षा आवेदन पत्र पुस्तक के साथ मिल रहे हैं।

प्रचारक और छात्रों से निवेदन है कि वे पुस्तक के साथ जो आवेदन पत्र मिलता है, उसी का उपयोग करें। पुराने आवेदन पत्रों का उपयोग न करें। वे स्वीकार नहीं किये जाएँगे।

परीक्षा सचिव **प्रधान सचिव**

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव सचिवालय
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रचारक बंधु, हिन्दी प्रेमी एवं सभा के सदस्यों से शतमानोत्सव दान के लिए सप्रेम निवेदन

महोदय/महोदया,

सादर वन्दे! आप जानते हैं, सभा की स्थापना सन् 1918 में पूज्य महात्मा गाँधीजी द्वारा की गयी। उन्होंने जीवनपर्यंत सभा का संस्थापक अध्यक्ष रहकर मार्ग-दर्शन दिया।

प्रथम प्रचारक श्री देवदास गाँधीजी के द्वारा शुरू किये गये हिन्दी प्रचार कार्य के फलस्वरूप आज आठ स्नातकोत्तर केन्द्र, बयालीस शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यालय, पाँच सी.बी.एस.ई. पाठशालाएँ और कई हिन्दी शिक्षण केन्द्र चल रहे हैं। इन संस्थाओं के शिक्षार्थियों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।

सभा के कार्यकलाप लगभग पिछले दस दशकों से दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ रहे हैं। यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि सभा का शतमानोत्सव समारोह सन् 2018 को संपन्न होगा। इसके लिए सभा विभिन्न योजनाएँ अपनाकर उसकी सफलता हेतु प्रयास कर रही है। उपर्युक्त कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर मनाना चाहते हैं, लेकिन आपको विदित है कि इसके लिए करोड़ों रुपये खर्च होंगे। आपकी सहायता के बिना यह काम सफल नहीं होगा।

आशा है कि सभा की हर उन्नति पर आपका संपूर्ण योगदान रहेगा। शतमानोत्सव समारोह को सफल बनाने हेतु आपसे दान की प्रार्थना करते हैं। इतना ही नहीं, आप जैसे हिन्दी प्रेमी, हितैषी तथा अन्यान्य सज्जनों से भी दान वसूल करके भेजने की प्रार्थना भी की जाती है।

शतमानोत्सव दान की राशि DBHP SABHA CENTENARY CELEBARATIONS FUND के नाम से किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक (NATIONALISED BANK) से डी.डी./चेक के साथ अपना विवरण, पता, टेलीफोन/ मोबाइल नंबर ई-मेल के साथ 'प्रधान सचिव, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागरायनगर, मद्रास - 600 017. को भेजने की व्यवस्था करें।

शतमानोत्सव दान भेजने हेतु प्रोफार्मा अगले पृष्ठ पर दिया गया। प्रार्थना है कि उसे भरकर दान सहित हमें भेजने की कृपा करें।

सचिव प्रधान सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव हेतु दान भेजने प्रपत्र
Application to Send Donation to Centenary Fund

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास - 17.

शतमानोत्सव समारोह सचिवालय

CENTENARY CELEBRATIONS SECRETARIAT

महोदय/महोदया,

सादर वन्दे! दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के शतमानोत्सव भव्य ढंग से मनाने हेतु मैं अपनी ओर से शतमानोत्सव दान निम्नलिखित विवरणानुसार भेज रहा/रही हूँ। स्वीकार करें।

नाम

कार्यक्षेत्र

पता

फोन/मोबाइल

दान राशि

डी.डी./चेक नंबर तथा तारीख

प्रार्थना है कि कृपया उपर्युक्त राशि के लिए रसीद यथाशीघ्र भेजने की व्यवस्था करें।

हस्ताक्षर

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव सचिवालय

CENTENARY SECRETARIAT

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

सभा के लिए आय-कर छूट (100%) प्राप्त हुई

यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के लिए भारत सरकार के आयकर विभाग ने 100 प्रतिशत आयकर छूट दी है। यह 01.04.2017 से लागू है। सभा के शतमानोत्सव के अवसर पर आप जितना दान देंगे उस रकम के लिए 100% की इन्कम टैक्स छूट मिलेगी। आपके अवलोकनार्थ विभाग से प्राप्त नोटिफिकेशन दिया जा रहा है।

सचिव **प्रधान सचिव**

OFFICE OF THE
CHIEF COMMISSIONER OF INCOME-TAX (EXEMPTION), DELHI
26th Floor, E-2, Block, Pratyaksh Kar Bhawan Civic Centre,
J. L. N. Marg, New Delhi-110002.

Dated : 31-03-2017

NOTIFICATION
(Income Tax)

No. CCIT(E)/Order u/s 80G(2)(a)(iiif)/2016-17/

In exercise of the powers conferred by the Sub-Clause (iiif) of sub-section 2(a) of section 80G of the Income Tax Act, 1961 (43 of 1961), the prescribed authority i.e. Chief Commissioner of Income-tax (Exemptions) hereby notifies **'Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Chennai'** as an Institute of National Eminence' for the purposes of the said sub-clause, subject to the following conditions namely:-

(i) **'Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Chennai'** an Institute of National Eminence will apply the amount of donations received wholly and exclusively to the objects for which it is established.

(ii) In respect of the donations received under the aforesaid provisions and expenditure made therefrom, the **'Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Chennai'** an Institute of National Eminence shall maintain separate account.

(iii) A copy of accounts of each accounting year shall be submitted to the prescribed authority by the 31st December next following the last date of accounting year.

(Binod Kumar)
Chief Commissioner of Income Tax
(Exemptions), New Delhi.

Copy to:
(1) Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Chennai.
(2) Director, ITA-I, Central Board of Direct Taxes, New Delhi.
(3) The Commissioner of Income Tax(Exemptions),Chennai

(Sunil Kumar Yadav)
Joint Commissioner of Income Tax
(Hqrs)(Exemptions), Delhi.

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

शतमानोत्सव सचिवालय
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

धन्यवाद ज्ञापन

आपको विदित है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास का शतमानोत्सव इस वर्ष - 2018 में बड़े पैमाने पर मनाने जा रहे हैं। इस उपलक्ष्य में सभी हिन्दी प्रचारक/हिन्दी प्रेमी/सभा के हितैषियों से उक्त समारोह को सफल बनाने हेतु दान माँगते हुए अपील की गयी।

यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कई प्रचारकों से दान प्राप्त हो रहा है। दान भेजनेवाले प्रचारक/हिन्दी प्रेमियों के नाम समय-समय पर हिन्दी प्रचार समाचार में दिये जा रहे हैं। ता. 15.02.2018 तक प्राप्त दान का विवरण निम्न प्रकार है।

सर्वश्री :

क्र.सं.	नाम	गाँव	रक़म	क्र.सं.	नाम	गाँव	रक़म
1	गुड़लक पब्लिशर्स	चेन्नै	11000	30	आर. वेंकटेश	कुंभकोणम	500
2	एम. लोकनाथन	चेन्नै	10000	31	आर. पद्मा	कुंभकोणम	500
3	पी. राधाकृष्णमूर्ति	पेद्दपल्ली	4000	32	एस. रेवती सट्टनाथन	तिरुच्ची	500
4	पी.एन.वी. श्रीवाणी	मंचेरियल	4000	33	वी. वेंकटेश प्रसाद	मांडिया	500
5	एन. सीहेच. इंदिरा माधवी	श्रीकाकुलम	3000	34	वी. शेषरत्नम	तुनी	500
6	अलका शर्मा, प्र.अ.	मंचेरियल	3000	35	डी. अल्फ्रेड रत्नवेलु	पांडिच्चेरी	500
7	वी.जी.एस.एल. कांतम	हैदराबाद	2000	36	जी.वी. सूर्यनारायणा	गुंटूर	500
8	पेदपाटी नागेश्वर राव	पेदरावूरू	2000	37	एम. रमेश	गुंटूर	500
9	टी.एस.आर. आंजनेयलु	विशाखपट्नम	1116	38	के. चन्द्रशेखर	गुंटूर	500
10	पी. मोहनराव	गुंटूर	1116	39	ललित किशोर और दोस्त, दसवीं कक्षा	मंचेरियल	500
11	पी. गोदावरी	गुंटूर	1116	40	खुशबू और दोस्त, नौवीं कक्षा	मंचेरियल	500
12	एस. रामकृष्णाराव, एस. रमा	गुंटूर	1116	41	सी.हेच.शिवनारायणा	गुंटूर	500
13	पी.वी.आर. श्रीनिवासराव, पी. गायत्री	गुंटूर	1116	42	पी. श्रीनिवासराव	गुंटूर	400
14	एस. गिरिजा	चेन्नै	1001	43	एस. कनकलक्ष्मी	चेन्नै	300
15	टी. विजयेश्वरी	कोत्तगुडेम	1000	44	सी. तेनमोषी	अंबासमुद्रम	300
16	पी. आर. भास्करन नायर	चेन्नै	1000	45	वी. भवानी	अरक्कोणम	300
17	जी. आर.एन. अन्नपूर्णा	तुनी	1000	46	के. ओ. एलि कुट्टी	मुत्तोलापुरम	251
18	के. प्रसन्ना	तिरुच्ची	1000	47	बी. नागरत्ना, ब्लाक एडुकेशनल आफीसर	लिंगसुगर	250
19	वी. गुणशेखरन	तिरुच्ची	1000	48	ए. संसारा	तिरुनेल्वेली	200
20	वल्लभनेनि हनुमंतराव	गुंटूर	1000	49	एस. नागमणी	गुंटूर	200
21	एम. चन्द्रशेखर राव	गुंटूर	1000	50	गोपिका रमणी	तंजाऊर	200
22	वी. नागमणि	मंचेरियल	1000	51	तारा सुरेन्द्रन	चेन्नै	200
23	के.एस. रमादेवी	मंचेरियल	1000	52	आर. उषा फ्रीडा	रेड्डिवलम	200
24	के. मंजुला देवी	सात्तूर	600	53	एस.कल्पना	सेलम	100
25	एन. के. बालसुब्रह्मणियम	चेन्नै	500	54	एस. विजयलक्ष्मी	कलमपाडी	100
26	एम. आनन्द नाइक	उडुपी	500	55	टी. नागलक्ष्मी	जग्गियापेट	100
27	पी. बिन्दु माधवराव	नुज्वीड	500	56	एम. अरुणा	शिवगंगै	100
28	आर. मीनाक्षी	उडुमलपेट	500	57	के. सुब्बैया शर्मा	गुंटूर	100
29	आर. मल्लिका	चेन्नै	500	58	सी.हेच. अनंतलक्ष्मी	गुंटूर	100

उक्त दाताओं को आयकर छूट 100% संबंधी पत्र अलग डाक में भेजा जाएगा।

सचिव CCS

प्रधान सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास - 17

प्रचारकगण कृपया ध्यान दें!

प्रचारक पहचान-पत्र

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में गत दस दशकों से राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में लगी रही है। हर्ष की बात है कि सभा इस वर्ष 2018 में शतमानोत्सव मनाने जा रही है। इस शुभ अवसर पर सभा के स्तम्भ के रूप में कार्यरत प्रचारकों को गौरवान्वित करने के उपलक्ष्य में एक पहचान पत्र (Identity Card) प्रदान करने का निर्णय हुआ है। अतः सभा के चारों प्रांतों के चालू प्रमाणित प्रचारक "हिन्दी प्रचार समाचार" के इस अंक में संलग्न फारम को भरकर अपने एक Stamp Size Colour Photo के साथ ₹ 100/- की डी.डी. (केन्द्र सरकार की योजना के अंतर्गत निःशुल्क या महाविद्यालय चलानेवाले प्रचारक ₹ 150/- की डी.डी.) "The General Secretary, D.B. Hindi Prachar Sabha, T.Nagar, Chennai-600 017" के नाम पर लेकर भेजेंगे तो उन्हें एक महीने के अंदर सभा के मुहर के साथ पहचान पत्र दिया जाएगा। इसकी मान्यता दस साल तक रहेगी। सभा के इस नूतन कदम को और आगे बढाने प्रचारकों का सहयोग और सहकार अपेक्षित है।

आशा करते हैं कि प्रचारकगण सभा की इस नयी योजना का स्वागत करेंगे।

– प्रधान सचिव

BIO-DATA

डी.डी. की संख्या .....

₹ .....

या

रसीद संख्या .....

₹ .....

1. नाम
2. पिता का नाम
3. जन्म की तारीख
4. शैक्षिक योग्यताएँ
5. कार्यक्षेत्र एवं सेवाकाल
6. रुधिर वर्ग
7. स्थाई पता
8. चालू प्रमाणित प्रचारक संख्या
9. फोन/मोबाइल नंबर
10. हस्ताक्षर

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

भारत की सामासिक संस्कृति को पुष्ट करनेवाले हिंदीतर भाषा के शब्द - 4

ईश्वर करुण

बागुन्नारा

सुनने में यह शब्द आरंभ में भले ही हिंदी भाषियों को अटपटा लगे, किंतु इस एक शब्द के प्रभाव का विस्तार जानकर और फिर अनुभव कर जो खुशी प्राप्त होती है वह अनूठी है। कारण "तेलुगु" भाषा का यह शब्द तेलुगु भाषियों के बीच अति लोकप्रिय शब्द है, जिसका अर्थ है - "आप कैसे हैं"? इसके समकक्ष हिंदी का "क्या हाल है"? या अंग्रेज़ी का "हाउ आर यू" है जो लोकभाषा का व्यवहार में बहुत प्रचलित है, किंतु "बागुन्नारा" की लोकप्रियता इन दोनों से कुछ ज़्यादा ही है।

इस एक शब्द को बोलते ही तेलुगु भाषियों से जुड़ाव का जो सुख मिलता है, वही हमारे देश की सामासिक संस्कृति का पुष्टिकारक तत्व है। "बागुन्नारा" प्रश्नात्मक शैली में पूछने पर जवाब मिलेगा – "नेनु बागुन्नानु","मीरू बागुन्नारा"? यानी "मैं कुशल हूँ, आप कुशल हैं"?

हिंदी के बाद हमारे देश की सभी भाषाओं में संख्या की दृष्टि से तेलुगु भाषियों का ही स्थान है। तेलुगु भाषी दो राज्यों आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के साथ इन राज्यों के सीमावर्त्ती क्षेत्रों में भी तेलुगु भाषियों की बड़ी संख्या है। विदेशों में भी तेलुगु भाषियों की बड़ी संख्या है। तेलुगु का यह प्यारा शब्द क्षण भर में पूरे तेलुगु समाज से जोड़ देता है। सीखना भी कोई कठिन नहीं! जब हम जापानी शब्द "सायोनारा" सीखकर गीत गुनगुनाते हैं तो फिर "बागुन्नारा" भी कठिन तो नहीं। "बाहुबली" और कट्टप्पा तो हम पूरी तरह जानने ही लगे हैं।

हिंदी भाषा में "क्या समाचार"?, "क्या हाल"? "कुशल है"? "आदि औपचारिक शब्दों या शब्द समूह में "बागुन्नारा" भी जोड़ दिया जाय तो भाषा का सौष्ठव भी बढ़ जाता है और भाषा की व्यावहारिकता भी तेलुगु मानस को झंकृत कर देती है और इस झंकार से देश की सामासिक संस्कृति की जो रागात्मक लय पैदा होती है, वह हमारी अभिव्यक्ति को भी नये आयाम देती है।

हिंदी भाषा और इसके व्यवहार में इस एक शब्द के साथ तेलुगु भाषियों के बृहत समाज से क्षण भर में जुड़ाव हो जाता है और फिर इसका असर इस रूप में होना ही है कि तेलुगु भाषी हिंदी को सिर्फ़ राजकाज की भाषा या राष्ट्रभाषा ही नहीं समझेगा बल्कि हिंदी को तेलुगु स्वाभिमान की भाषा भी मानने लगेगा। अगली बार किसी तेलुगु भाषी से हिंदी में बात करते समय "बागुन्नारा" का सही प्रयोग कर देखिए, आपकी स्वानुभूति आपको विवश करेगी कि आप यथा समय, यथा स्थान और यथा संदर्भ में "बागुन्नारा" शब्द को अपनाएँ।

जनसंपर्क अधिकारी, शतमानोत्सव विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई.

परीक्षा विभाग की सूचना!

जिन परीक्षार्थियों का परीक्षा–फल रोका गया (With Held) है, उनके प्रवेश-पत्र पर इसका विवरण दिया गया है। उनको चाहिए कि परीक्षा-फल के प्रकाशन की तारीख से 45 दिनों के अंदर अपनी पूर्व परीक्षा का उत्तीर्णता-विवरण या अपेक्षित विवरण देकर अपना परीक्षा-फल छुड़ा लें, अन्यथा उनकी दी हुई परीक्षा रद्द मानी जाएगी।

–परीक्षा सचिव

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

पाठ्य पुस्तक-सूची, अगस्त, 2018
SYLLABUS FOR AUGUST, 2018

प्राथमिक	**PRATHAMIC**
दक्षिण	Dakshin
मध्यमा	**MADHYAMA**
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
सुबोध हिंदी पाठमाला-2 (भारत-1)	Subodh Hindi Patamala-2 (Bharat-1)
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
हिंदी कथा सरोवर (भारत-2)	Hindi Katha Sarovar (Bharat-2)
सुबोध हिंदी रचना-2 (भारत-3)	Subodh Hindi Rachana-2 (Bharat-3)
राष्ट्रभाषा	**RASHTRABHASHA**
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
सुबोध हिंदी पाठमाला-3 (हिन्दी-1)	Subodh Hindi Patamala-3 (Hindi-1)
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
कथा रत्नावली (हिन्दी-2)	Katha Ratnavali (Hindi-2)
सुबोध हिन्दी रचना-3 (हिन्दी-3)	Subodh Hindi Rachana-3 (Hindi-3)
प्रवेशिका	**PRAVESHIKA**
(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन पद्य चयनिका -1	Naveen Padya Chayanika - 1
नवीन गद्य चयनिका -1	Naveen Gadya Chayanika - 1
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
सत्य का स्वर	Sathya Ka Swar
सत्यमेव जयते (संवर्धित)	Sathyameva Jaythe (Revised)
हिंदी व्याकरण प्रवेशिका-1	Hindi Vyakaran Praveshika- 1
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
भाग - I	**PART - I**
हिंदी रत्नाकर	Hindi Ratnakar
भाग - II	**PART -II**
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)	**(Regional Language – Telugu)**
गद्य मंदारम	Gadya Mandaaram
काव्य मंजरी (तेलुगु)	Kavya Manjari (Telugu)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4)	(Pub.: D.B.H.P.Sabha,(Andhra) Khairatabad,Hyderabad-4)
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)	**(Regional Language – Kannad)**
कन्नड गद्य भारती भाग–1	Kannad Gadya Bharati Part-1
कन्नड पद्य भारती भाग–1	Kannad Padya Bharati Part-1
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, (कर्नाटक), डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड़–580 001)	(Pub.: D.B.H.P. Sabha, (Karnataka), D.C. Compound, Dharwad-580 001)
(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
गद्य तरंगावली	Gadya Tharangavali

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

पद्य तरंगावली	Padya Tharangavali
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, (केरल), चित्तूर रोड़, एरणाकुलम, कोच्चिन –16)	(Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala), Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)
(प्रादेशिक भाषा – तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
तमिल पोषिल–1 (पद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)
तमिल पोषिल–2 (गद्य संग्रह)	Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, (तमिलनाडु), तेन्नूर हाई रोड़, तिरुच्चि–17)	(Pub.: D.B.H.P. Sabha, (Tamil Nadu), Tennur High Road, Trichy-17)
(प्रादेशिक भाषा – मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)	Sreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)
उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी, कांटिनेंटल प्रकाशन, विजयनगर, पूणे–30)	Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni, Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

राष्ट्रभाषा विशारद पूर्वार्द्ध — R.B. VISHARAD POORVARDH

(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन गद्य चयनिका - 2	Naveen Gadya Chayanika-2
निर्मला	Nirmala
नवीन कहानी कलश	Naveen Kahani Kalash
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
नवीन हिन्दी व्याकरण	Naveen Hindi Vyakaran
व्यावहारिक हिन्दी (पत्र-लेखन)	Vyavaharik Hindi (Letter Drafting)
(हिन्दी संक्षिप्त लेखन)	(Hindi Samkshipta Lekhan)
हिन्दी निबंध संकलन	Hindi Nibandh Sankalan
अनुवाद अभ्यास-5	Anuvad Abhys-5
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
(प्रादेशिक भाषा – तेलुगु)	**(Regional Language – Telugu)**
गद्य चंद्रिका	Gadya Chandrika
काव्य कुसुमावली (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)	Kavya Kusumavali (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(प्रादेशिक भाषा – कन्नड)	**(Regional Language – Kannad)**
आधुनिक कन्नड गद्य भारती–2	Adhu. Kannada Gadya Bharati-2
परिसर मानव इतर कवितेगलु	Parisara Manava Ithara Kavithegalu
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)	(Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)
(प्रादेशिक भाषा – मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
पतिनोन्नु कथैकळ	Pathinonnu Kathaikal
पद्य रत्नम (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)	Padya Ratnam (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Kerala)
(प्रादेशिक भाषा – तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
इलक्किय कनिगळ	Ilakkiya Kanigal
मलर्चेण्डु (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)	Malar Chendu (Pub. : D.B.H.P. Sabha, Tamil Nadu)
(प्रादेशिक भाषा – मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
चांदणवेल (संपादक : गो.प. कुलकर्णी)	Chaandhanavel (Editor: G.P. Kulkarni)
गोतावळा (लेखक : आनंद यादव)	Gothavala (Author: Anand Yadav)

राष्ट्रभाषा विशारद उत्तरार्द्ध — R. B. VISHARAD UTTHARARDH

(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन पद्य चयनिका - 2	Naveen Padya Chayanika-2
पंचवटी	Panchavati

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
ध्रुवस्वामिणी	Dhruva Swamini
प्राचीन भारत का इतिहास	Praacheen Bharat ka Ithihas
सूर्योदय (प्रकाशन-द.भा.हिं.प्र. सभा)	Sooryoday (Sabha Pub.)
(तृतीय पत्र – मौखिक)	**(Third Paper – Viva-voce)**
मौखिक - प्रश्नोत्तरी सहित लिखावट के नमूने	Viva-voce with Likhavat ke Namune

राष्ट्रभाषा प्रवीण पूर्वार्द्ध — R. B. PRAVEEN POORVARDH

(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
नवीन गद्य चयनिका - 3	Naveen Gadya Chayanika-3
स्कन्दगुप्त (नाटक)	Skandagupta (Natak)
निबंध सौरभ	Nibandh Sowrobh
ग़बन (प्रेमचंद)	Gaban (Premchand)
(द्वितीय पत्र)	**(Second Paper)**
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	Hindi Sahitya ka Samkshipte Itihas
दक्षिण में हिन्दी प्रचार आंदोलन का इतिहास	Dakshin me Hindi Prachar Antholan ka Itihas
दक्षिणी कथाएँ (परिवर्द्धित)	Dakshini Kathayen (Revised)
(तृतीय पत्र)	**(Third Paper)**
(प्रादेशिक भाषा – तेलुगु)	**(Regional Language – Telugu)**
व्यास मंजूषा	Vyaas Manjusha
काव्य माला (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)	Kavya Mala (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(प्रादेशिक भाषा – कन्नड)	**(Regional Language – Kannad)**
कन्नड कथा भारती	Kannad Katha Bharathi
कन्नड पद्य भारती, भाग–3	Kannad Padya Bharati, Part-3
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)	(Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)
(प्रादेशिक भाषा – मलयालम)	**(Regional Language – Malayalam)**
चिन्ता विष्टयाय सीता	Chintha Vistaya Seetha
मलयाल माधुर्यम (उपलब्ध : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)	Malayala Madhuryam (Available: D.B.H.P.Sabha,Kerala)
(प्रादेशिक भाषा – तमिल)	**(Regional Language – Tamil)**
कंबरामायणम – वालिवधैप्पडलम	Kambaramayanam - Valivadhaipadalam
कवितैप्पूँगा (पुरनानुरु और कंब रामायण को छोड़कर)	Kavithaipoonga (Except Puranaanooru and Ramayan)
तमिल इलक्किय वरलारु (प्रका.: द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)	Tamil Ilakkiya Varalaaru (Pub.:D.B.H.P.Sabha,Tamil Nadu)
(प्रादेशिक भाषा – मराठी)	**(Regional Language – Marathi)**
गावगुंड (प्रकाशक : लेखक – ग.ल. टोकल	Gaavagund (Pub.: Author - G.L. Tokal
श्री लेखन वाचन भण्डार 1004, बुधवार पेट, पूणे–2)	Sri Lekan Vaachan Bandar 1004, Budhvarpet, Pune-2)
अभ्र (संपादक : कृ.व. निकुम्ब)	Abhra (Editor: K.V. Nikumba)

राष्ट्रभाषा प्रवीण उत्तरार्द्ध — R.B. PRAVEEN UTTARARDH

(प्रथम पत्र)	**(First Paper)**
रश्मिरथी	Rashmirathi
नवीन पद्य चयनिका-3	Naveen Padya Chayanika-3
प्राचीन पद्य चयनिका	Pracheen Padya Chayanika

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

(द्वितीय पत्र)
काव्य के रूप
काव्य शास्त्र (रस,छंद अलंकार)

(Second Paper)
Kavya Ke Roop
Kavya Shastra (Ras, Chandh, Alankar)

1. नौ रसों का सामान्य परिचय।
2. शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति।
3. अर्थालंकार : उपमा, प्रतीप, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, भ्रम, संदेह, दृष्टान्त, उदाहरण, उल्लेख, निदर्शन, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा, समासोक्ति, व्याजस्तुति, विरोधाभास।
4. छन्द : चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लास, कुंडलिया, कवित्त, सवैया, छप्पय, द्रुतविलंबित, वंशस्थ, मालिनी, मंद्राक्रान्ता। भाषा विज्ञान प्रवेश

(तृतीय पत्र)
त्रिपथगा (निबंध संग्रह)
प्रयोजन मूलक हिन्दी (सभा प्रकाशन)
अनुवाद अभ्यास - 6

(Third Paper)
Thirpathaga
Prayogan moolak Hindi (Sabha Pub.)
Anuvad Abhyas-6

(मौखिक)
लिखावट के नमूने

(Viva-voce)
Likhavat ke Namune

आसान परीक्षा पाठ्यक्रम — EASY LANGUAGE SYLLABUS

(प्रवेशिका)
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – I
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – I
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – I
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – I
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – I (मुद्रण में)

(PRAVESHIKA)
Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-I
Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-I
Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-I
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-I
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-I

(रा.भा. विशारद पूर्वार्द्ध)
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – II
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – II
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – II
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – II
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – II

(R.B. VISHARAD POORVARDH)
Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-II
Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-II
Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-II
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-II
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-II

(रा.भा. प्रवीण पूर्वार्द्ध)
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – III
कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी – III
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – III
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – III
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – III (मुद्रण में)

(R.B. PRAVEEN POORVARDH)
Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-III
Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-III
Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-III
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-III
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-III

प्रकाशक : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

हिंदी प्रचार समारोह

प्रमाण - पत्र वितरणोत्सव समारोह
हिंदी प्रेमी मंडली, सिकिन्द्राबाद

दिनांक 07.01.2018 को हिंदी प्रेमी मंडली, सिकिन्द्राबाद तथा शरत् हिंदी महाविद्यालय के तत्वावधान में "शरत् कुटीर" वारीसगुडा के प्रांगण में प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव समारोह प्रार्थना गीत के साथ आरंभ हुआ। श्री पी. हरि लक्ष्मण, प्राचार्य, काकतीया हाई स्कूल ने अध्यक्षासन ग्रहण किया। श्री एम.रघुपति, अध्यक्ष, हिंदी प्रेमी मंडली ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया।

प्रेमी मंडली के अध्यक्ष श्री एम.रघुपति ने मंडली के परिचय में बताया कि गत् पचास वर्षों से मंडली की ओर से लगभग 25,000 छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हुए हैं। मुख्य अतिथ श्रीमति अनुराधा, अवकाश प्राप्त व्यवस्थापिका, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र व तेलंगाना तथा शिक्षा परिषद के सदस्य ने सभा की ओर से संचालित परीक्षाओं का परिचय दिया। श्री प्रेमकुमार, अधिवक्ता ने श्री रघुपति के हिंदी सेवाओं की प्रशंसा की। अध्यक्ष श्री हरि लक्ष्मण ने हिंदी भाषा की अपयोगिता पर प्रकाश डाला। तदुपरांत प्राथमिक से प्रवीण तक के परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित की गई।

श्री एम.रघुपति, अध्यक्ष, प्रेमी मंडली ने अतिथियों को धन्यवाद समर्पित किया। राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

हिंदी प्रमाण - पत्र वितरणोत्सव
हिंदी प्रेमी मंडली, हैदराबाद

दिनांक 19.01.2018 के शाम 5.00 बजे हिंदी प्रेमी मंडली, हैदराबाद की ओर से सरकारी उन्नत पाठशाला विजयनगर कॉलनी, हैदराबाद में हिंदी प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव संपन्न हुआ। मान्यश्री चवाकुल नरसिंह मूर्ति ने हिंदी प्रेमी मंडली के अध्यक्षासन ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में तेलंगाना राज्य सरकार के उप मुख्य मंत्री माननीय श्री मोहमद महमूद अली, मुख्य अतिथि रहे। एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना सरकार की ओर से पधारे श्रीमती बि.शेशुकुमारी निदेशक विशिष्ठ अतिथि रहीं।

सुमधुर प्रार्थना गीत से कार्यक्रम का विधिवत् प्रारंभ हुआ। मान्य श्री चवाकुल नरसिंहमूर्ति ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि एवं महामान्य सदस्यों का सम्मान कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्रीमती चवाकुल विजय निर्मला ने कार्यक्रम का संचालन किया।

मुख्य अतिथि अपने भाषण में कहा कि हिंदी राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा है। हिंदी अत्यधिक बोली जाती है। देश के सभी प्रांतों के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधनेवाली भाषा हिंदी है। हिंदी भारत की एकता और अखंडता स्थापित करती है। उन्होंने कहा कि भारत के हर नागरिक को राष्ट्रभाषा हिंदी सीखनी चाहिए। उन्होंने हिंदी भाषा की सेवा एवं उसका प्रचार करनेवाली हिंदी प्रेमी मंडली तथा सभा की प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी मधुर भाषा है। देश की एकता के लिए हिंदी ने बड़ा योगदान दिया है। अपने हिंदी प्रेमी मंडली के प्रचार-प्रसार की सफलता के लिए अध्यक्ष श्री चवाकुल नरसिंहमूर्ति को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस उम्र में राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाकर हिंदी प्रचार कार्य में निरंतर काम कर रहे हैं। अतः श्री चवाकुल नरसिंहमूर्ति सबके बधाई के पात्र हैं।

हिंदी प्रेमी मंडली के अध्यक्ष श्री चवाकुल नरसिंहमूर्ति अपने भाषण में कहा कि सभा की स्थापना महात्मा गाँधीजी ने 1918 में की। सभा दिन दूनी रात चौगूनी अग्रसर हो रही है।

विशिष्ठ अतिथि एस.सी.आर.टी. के निदेशक श्रीमती शेशुकुमारीजी अपने भाषण में कहा कि हिंदी सीखने से कई लाभ है। मातृभाषा के साथ हिंदी भाषा भी सीखनी चाहिए।

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

उप मुख्य मंत्री माननीय श्री मोहम्मद महमूद अली ने हिंदी प्रेमी मंडली, हैदराबाद की ओर से श्री एम. रामा सुब्बय्या नायुडु, श्री जी.सीतारामय्या, जि.नागेश्वरी देवी, संदेपुडि सत्यनारायण, देवीदास गायकवाड, एन.जगन्नाथम, श्रीमती सी.हेच. विजय निर्मला, श्री चवाकुल वेंकटेश्वरलु, एम.विठ्टल रेड्डी कृष्णा, सृजना प्रियदर्शिनी, विशालदास, एम.डी. खली मुद्दीन, श्रीमती मल्लदी अन्नपूर्णा, पुष्पा सिंह, श्रीनिवासुलु आदि लगभग पचास से अधिक प्रचार्यों एवं हिंदी पंडितों को शॉल, ज्ञापिका तथा त्रिभाषा कोश से सम्मान किया ।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री चवाकुल रामकृष्णा राव ने किया। उक्त कार्यक्रम को सुसंपन्न बनाने हेतु कार्यक्रम की अंतिम कड़ी के रूप में हिंदी प्रेमी मंडली, हैदराबाद के सचिव श्री एस.रामा सुब्बय्या नायुडु ने धन्यवाद समपर्ण किया। कार्यक्रम संतुष्टजनक रहा। सामूहिक राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

हिंदी प्रचारक सम्मेलन
गुंटूर जिला प्रचारक मंडली

दिनांक 21.01.2018 रविवार अपराह्न 2:00 बजे गुंटूर जिला हिंदी प्रचारक मंडली के तत्वावधान में जिला हिंदी प्रचारक सम्मेलन तथा हिंदी महासभा का आयोजन कोत्तपेटा (गुंटूर) के फ्रांसी मर्चेंट्स अशोशियेषन हॉल में संपन्न हुआ। प्रचारक मंडली के अध्यक्ष डॉ.एम. मधुसूदन राव ने अध्यक्षता ग्रहण की।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आँध्र तथा तेलंगाना के अध्यक्ष श्री पी. ओबय्याजी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को मातृभाषा के साथ हिंदी भी सीखनी है। हिंदी भाषा प्रांतीय भाषाओं के बीच संबंध जोड़नेवाली राष्ट्रीय भाषा है। उन्होंने यह भी कहा कि इस भाषा को प्रांतों तक सीमित नहीं रखना है।

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख योद्धा श्री पावुलूरि शिवरामकृष्ण ने कहा कि स्वतंत्रता के आंदोलन में देश की जनता को एक सूत्र में बाँधने में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का बड़ा हाथ रहा।

टंगुट्रि प्रकाशम पंतुलु, कोंडा वेंकटप्पय्या, बोयपाटि नागेश्वरराव जैसे राष्ट्रवादियों ने आँध्र प्रांत के हिंदी प्रचार आंदोलन में बड़ा योगदान दिया था। गुंटूर जिला हिंदी प्रचारक मंडली के अध्यक्ष श्री बी. अंजय्या ने कहा कि हिंदी भाषा के द्वारा ही देश की उन्नति हो सकती है। हिंदी के द्वारा ही सब में एकता बढ़ती है।

बाद में कई हिंदी प्रेमियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर द.भा. हिंदी प्रचार सभा, आँध्र व तेलंगाना के सचिव श्री सी.एस.होस गौडर, जिला हिंदी प्रचारक मंडली के गौरावाध्यक्ष श्री बी.अंजय्या, सचिव श्री पी. नागेश्वर राव, श्री कोंजेटि शिव नाग प्रसाद, श्री सय्यद सरदार, श्री पी. साईनाथ राव आदि प्रमुख व्यक्तियों ने भाषण दिया।

भाषणमाला कार्यक्रम
शिवकाशी हिंदी शिक्षक संघ, शिवकाशी

शिवकाशी हिंदी शिक्षक संघ की ओर से भाषण माला कार्यक्रम 21.01.2018 रविवार को रोटरी मेट्रीक हायर सेकंडरी स्कूल, विश्वनत्तम में सुसंपन्न हुआ।

करीब 300 छात्र-छात्राएँ भाग लेकर लाभान्वित हुए। लगभग 200 शिक्षकों ने सुचारु रूप से वर्ग चलाया। विशेष तौर पर प्राथमिक वर्ग के छात्र-छात्राओं को बोलचाल हिंदी वर्ग एवं बुनियादी व्याकरण वर्ग चलाये गये।

सर्वश्री ए. राममूर्ति, के. विजय भास्कर नायुडु, एस.रमेश, टी.एस.शांताराम, जी.सेतुनाथ, ए.सेल्वराज और श्रीमती एम.एस.कण्णकी, पी.करजहसरलंइम, एन.मालती, ऐ.जयलक्ष्मी, एस.शक्तिविजया, पी. शिव मति, पी.उमामहेश्वरी, सी.शंकरी, आर.वेणी, बी.जयचित्रा, एस.विजयलक्ष्मी आदि प्रचारक एवं प्रचारिकाओं ने छात्र-छात्राओं को सुचारु रूप से प्रशिक्षण तथा मार्गदर्शन दिया।

इस भाषणमाला कार्यक्रम का प्रबंध सर्वश्री.एम.एस.सदाशिवन, एम.आर.जे.ज्ञानेश्वरन, के.वेलमुरुगन, बी.शिवकुमार, एस.सेल्वकुमार, सी.रघुरामन और जे.षण्मुखकुमार ने किया ।

रोटरी मेट्रीक हॉयर सेकंडरी स्कूल के प्रशासकों, प्रधानाध्यापिका और हिंदी अध्यापिकाओं को

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

धन्यवाद समर्पित किया गया। ऐय्य नाडार अम्माल कालेज, शिवकाशी के प्रशासक, प्रधानाचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह

द.भा.हिं.प्र.सभा, मद्रास

दिं.26.01.2018 प्रातः8.30 बजे केंद्र सभा, मद्रास के प्रांगण में भारत का गणतंत्र दिवस समारोह नगर कार्यालय के द्वारा आयोजित किया गया।

श्री इल.गणेशन, सांसद, राज्य सभा उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। श्री एस. पार्थसारथी, अध्यक्ष, शिक्षा परिषद, द.भा.हिं.प्र. सभा, मद्रास ने समारोह का अध्यक्षासन ग्रहण किया। श्री सी.एन.वी.अण्णामलै, कोषाध्यक्ष, द.भा.हिं.प्र.सभा, मद्रास तथा उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के कुलसचिव प्रो. प्रदीप के.शर्मा विशेष अतिथि रहे।

प्रथम रूप से श्री इल.गणेशनजी ने सभा परिसर में स्थित महात्मा गाँधीजी की मूर्ति को माल्यार्पण किया तथा झंडा फहराकर राष्ट्रध्वज का नमन किया।

आगे का कार्यक्रम सभा मंडप में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत महात्मा गाँधी विद्यालय के छात्रों के प्रार्थना गीत से हुई।

तदुपरांत प्रधान सचिव श्री एस.जयराज ने सबका स्वागत किया और श्री इल.गणेशन की उपस्थिति पर खुशी प्रकट की। श्री एस.पार्थसारथी ने गणतंत्र दिवस की श्रेष्ठता पर विचार व्यक्त किया। श्री सी.एन.वी. अण्णामलै ने गणतंत्र दिवस मनाने के उद्देश्य पर जोर दिया। प्रो. प्रदीप के.शर्मा ने भी गणतंत्र दिवस मनाने के उद्देश्य पर विचार प्रकट किया और कहा कि देश की उन्नति के लिए सबको एकजुट होना है और देश के विकास के लिए हमें परिश्रम करना है।

श्री इल.गणेशन अपने वक्तव्य में उपस्थित सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि द.भा.हिं.प्र.सभा भाषा द्वारा देश की एकता को कायम रखती है। उन्होंने इस साल शतमानोत्सव मनानेवाली सभा की प्रशंसा की और स्वयं शतमानोत्सव समारोह में भाग लेने की इच्छा प्रकट की।

कार्यक्रम की अंतिम कड़ी के रूप में द.भा.हिं.प्र. सभा, मद्रास के पूर्व सचिव श्री बी.शेखरन नायरजी का सम्मान सभा की ओर से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री इल.गणेशनजी ने उनका सम्मान किया। नगर एवं पत्रिका विभाग के सचिव श्री एस. राधाकृष्णन ने उपस्थित सभी को धन्यवाद समर्पण किया। श्रीमती एस. अनिता वरदराजन, व्यवस्थापिका, साहित्य विभाग ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

69वाँ गणतंत्र दिनोत्सव और हिंदी प्रमाण पत्र वितरण

हिंदी विशारद् विद्यालय, मदनपल्ली, आ.प्र

दि. 26.01.2018 सबेरे 9:00 बजे 69वाँ गणतंत्र दिवस गीता वाणी उन्नत पाठशाला, मदनपल्ली, चित्तूर जिला, आंध्र में धूमधाम से मनाया गया। डी.दीक्षिता, टी.रीना के प्रार्थना गीत से कायर्क्रम प्रारंभ की गई।

वरिष्ठ हिंदी प्रचारक यरगोंडा, सिद्धा रेड्डी ने तिरंगा झंडा फहराया। ध्वजारोहण कार्यक्रम के उपरांत पाठशाला के छात्र-छात्राओं से देश-भक्ति गीत एवं भाषण प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाध्यापक श्री के. रमणा रेड्डी ने किया।

प्रधानाध्याक ने बताया अब हमारे गणतंत्र भारत देश प्रगति मार्ग पर चल रही है। श्रीमती टी.मेहताज, यस.नेलसन, पी.सरला, यस.सुमिया ने भाग लेकर भारत की संविधान तैयार कराने में डॉ. अंबेड़कर के योगदान के बारे में बताया।

इस संदर्भ में सितंबर 2017 सत्र में प्राथमिक से प्रवीण तक की परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रधानाध्यापक ने प्रमाण-पत्र प्रदान किया।

हिंदी प्रचारक वै. सिद्धा रेड्डी ने बताया कि विद्यार्थियों को बचपन से ही हिंदी सिखाना बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। देश की एकता के लिए हिंदी पढ़ना अत्यंत आवश्यक है। व्यावहारिक भाषा सिखाने से देश भर घूमते समय बहुत फ़ायदा होगा।

विद्यार्थियों को प्रमाण पत्रों के साथ पुरस्कार भी प्रदान किया गया। अंत में राष्ट्र गान के साथ सभा विसर्जित हुई।

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

प्रचारक बंधुओ एवं परीक्षार्थियों कृपया ध्यान दें!

फरवरी 2018 से **'प्राथमिक'** परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र में ही उत्तर लिखने की व्यवस्था की गयी है। प्रश्न-पत्र अलग रूप से नहीं दिया जाएगा। प्रश्न-पत्र का नमूना निम्नांकित है। प्रश्न-पत्र के नमूने में परिवर्तन नहीं है। – परीक्षा सचिव

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras-17.
Examination Department

परीक्षा क्रम सं./ Exam. Roll No. [ ]

प्राथमिक / PRATHAMIC

समय : 2½ घण्टे दि. .....

Name of the Centre : ..... Translation in .....

Name of the Student .....

सूचना :--परीक्षार्थी अपना नाम, अनुवाद की भाषा और केन्द्र का नाम अवश्य लिखें। उत्तर पुस्तक में से कागज़ नहीं फ़ाड़ना चाहिए। हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद प्रश्न को छोडकर बाकी सभी प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में ही (देवनागरी लिपि) लिखें। पेंसिल या लाल स्याही से उत्तर नहीं लिखना चाहिए। परीक्षार्थी इस उत्तर पुस्तक में ही जवाब लिखें। परीक्षार्थियों को प्रश्नोत्तर के वैकल्पिक (Choice) प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए उन, उन प्रश्नों के सामने उत्तर लिखना चाहिए।

सफ़ाई के अंक	5	

परीक्षक के उपयोगार्थ

1. परीक्षक लाल स्याही का उपयोग कर जाँच करें।
2. अंकों का जोड़ करते समय सावधानी बरतें।
3. उचित स्थल पर प्राप्तांक अवश्य लिखें।

100

परीक्षक के हस्ताक्षर

1. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) दीवार पर क्या है? .....
(2) आप कौन हैं? .....
(3) सुधा, देखो, वहाँ कौन है? .....
(4) गाय क्या पीती है? .....
(5) शेखर का घर कहाँ है? .....
(6) तुम्हारा नाम क्या है? .....
(7) आज कौन-सा दिन है? .....
(8) कल अशोक कहाँ जाएगा? .....
(9) भैंस का दूध कैसा होता है? .....
(10) राजू ने आज क्या पढ़ा? .....

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

2. किन्हीं दो पद्यों का भावार्थ प्रांतीय भाषा में लिखिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) जिसने सारा जगत बनाया,
उसीने उसमें प्राण जगाया।
उसका ही गुण गाएँ हम,
उसीको शीश नवाएँ हम।

(2) मछली से सीखो,
स्वदेश के लिए तड़प तड़पकर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना।।

(3) झर-झर, झर-झर झरता झरना।
आलस कभी न करता झरना।।
थककर कभी न सोता झरना।
प्यास सभी की हरता झरना।।

(4) बड़ा नहीं होता कोई भी,
धन–दौलत पाने से।
नहीं बड़ा बनता मनुष्य,
ऊँचे महलों में रहने से।।

(5) समझो जग को न निरा सपना।
पथ आप प्रशस्त करो अपना।।
अखिलेश्वर है अवलंबन को।
नर हो न निराश करो मन को।।

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

3. किन्हीं पाँच वाक्यों को 'सही' या 'गलत' लिखिए:--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) हमारे देश का राष्ट्रीय पुष्प गुलाब है। (.....)

(2) हमारे देश का राष्ट्रीय पशु शेर है। (.....)

(3) आदिम मनुष्य शहरों में रहता था। (.....)

(4) आरंभ काल में मनुष्य पेड़ के नीचे निवास करता था। (.....)

(5) आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। (.....)

(6) गाय बड़ी सीधी-सादी होती है। (.....)

4. किन्हीं पाँच वाक्यों को मिलाइए:--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(अ)		(आ)	
(1) किसान	–	तेलुगु बोली जाती है।	.....
(2) सोनार	–	रामायण लिखी।	.....
(3) राजीव की माता का नाम	–	बड़ा निर्दयी था।	.....
(4) रत्नाकर	–	सोने से आभूषण बनाते हैं।	.....
(5) वालमीकि ने	–	इंदिरा गाँधी है।	.....
(6) आन्ध्र में	–	खेत जोतते हैं।	.....

5. किन्हीं पाँच की खाली जगह भरिए:--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) ..... पहनने के लिए कपड़े चाहिए।

(2) सोनार ..... के सामान भी बनाते हैं।

(3) दक्षिण में ..... महासागर है।

(4) समुद्रतट पर देवी कन्याकुमारी का एक पुराना ..... है।

(5) रत्नाकर ने एक दिन एक ..... को पकड़ा।

(6) आदमी बात-बात में ..... करता है।

6. किन्हीं छः का अर्थ प्रांतीय भाषा में लिखिए:--

कुल अंक	3	प्राप्तांक	

(1) धागा = ...

(2) तरकारी = ...

(3) फ़सल = ...

(4) बढ़ई = ...

(5) लहर = ...

(6) मूर्ति = ...

(7) उन्नति = ...

(8) विवाह = ...

(9) दीमक = ...

(10) शरीर = ...

7. किन्हीं छः के उल्टे अर्थवाले शब्द लिखिए:--

कुल अंक	3	प्राप्तांक	

(1) खरीदना x .....

(2) पुराना x .....

(3) अपना x .....

(4) पकड़ना x .....

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

(5) चुस्त x .....
(6) उत्तर x .....
(7) सभ्य x .....
(8) आसान x .....
(9) आकाश x .....
(10) होशियार x .....

8. किन्हीं पाँच शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए:--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) राजधानी .....
(2) दुनिया .....
(3) पहाड़ .....
(4) वर्षा .....
(5) जानवर .....
(6) परिवर्तन .....
(7) जल-यात्रा .....
(8) आवाज़ .....
(9) जंगल .....
(10) रखवाली करना .....

9. किन्हीं चार को अक्षरों में लिखिए:--

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) 6 .....
(2) 9 .....
(3) 15 .....
(4) 18 .....
(5) 21 .....
(6) 29 .....
(7) 40 .....
(8) 44 .....

10. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) किसान कहाँ रहते हैं?
उत्तर/Answer .....

(2) आभूषण बनानेवाले को क्या कहते हैं?
उत्तर/Answer .....

(3) कन्याकुमारी भारत के किस छोर पर है?
उत्तर/Answer .....

(4) चट्टान पर किसका स्मारक भवन स्थापित है?
उत्तर/Answer .....

(5) राजीव गाँधी का विवाह किससे हुआ?
उत्तर/Answer .....

(6) राजीव गाँधी को 'भारत रत्न' की उपाधि कब दी गयी?
उत्तर/Answer .....

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

(7) वाल्मीकि ने क्या लिखा?

उत्तर/Answer .....

(8) धूप से कौन-सा विटामिन मिलता है?

उत्तर/Answer .....

(9) कैलरी किसे कहते हैं?

उत्तर/Answer .....

(10) हमारा देश कब आज़ाद हुआ?

उत्तर/Answer .....

11. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर तीन-तीन वाक्यों में लिखिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) आदिम मनुष्य ने घर बनाना कब से शुरू किया?

उत्तर/Answer .....

.....

(2) जल-यात्रा के लिए मनुष्य ने कौन-कौन-से साधन बनाये?

उत्तर/Answer .....

.....

(3) गाय के बारे में तीन वाक्य लिखिए।

उत्तर/Answer .....

.....

(4) हाथी आदमी के लिए उपयोगी है - कैसे?

उत्तर/Answer .....

.....

12. किसी एक कहानी का सारांश लिखिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) दर्जी और हाथी (2) चुनमुन की कमीज़ (3) कपड़ों का आदर (4) दूध में पानी

( ) .....

.....

.....

.....

.....

13. किन्हीं पाँच वाक्यों का अनुवाद प्रांतीय भाषा में कीजिए:--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) आप यहाँ आइए।

उत्तर/Answer .....

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

(2) वेलू घर जाता है।

उत्तर/Answer .....

(3) राम पढ़ रहा है।

उत्तर/Answer .....

(4) नौकर सामान लाएगा।

उत्तर/Answer .....

(5) हम स्टेशन गये।

उत्तर/Answer .....

(6) सीता ने चार आम ख़रीदे।

उत्तर/Answer .....

(7) वह तालाब में तैर सकता है।

उत्तर/Answer .....

(8) मुझे एक कलम चाहिए।

उत्तर/Answer .....

14. किन्हीं पाँच वाक्यों का अनुवाद हिन्दी में कीजिए:--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) **Don't drink coffee.**

காப்பி குடிக்காதே.

ಕಾಫೀ ತ್ರಾಗವದ್ದು.

కాఫి కుడియ బేడ.

കാപ്പി കുടിയ്ക്കരുത്.

उत्तर/Answer .....

(2) **He writes a lesson.**

அவன் பாடம் எழுதுகிறான்.

అతను పాఠము వ్రాయుచున్నాడు.

ಅವನು ಪಾಠವನ್ನು ಬರೆಯುತ್ತಾನೆ.

അവൻ ഒരു പാഠം എഴുതുന്നു.

उत्तर/Answer .....

(3) **I shall play in the playground.**

நான் மைதானத்தில் விளையாடுவேன்.

నేను మైదానములో ఆడెదను.

ನಾನು ಮೈದಾನದಲ್ಲಿ ಆಡುವೆನು.

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

ഞാൻ മൈതാനത്തിൽ കളിയ്ക്കും.

उत्तर/Answer .....

(4) **We went to Banaras.**

நாங்கள் காசிக்குச் சென்றோம்.

మేము బెనారసు వెళ్ళితిమి.

ನಾವು ಕಾಶಿಗೆ ಹೋದೆವು.

ഞങ്ങൾ കാശിയിലേയ്ക്കു പോയി.

उत्तर/Answer .....

(5) **I drank water.**

நான் தண்ணீர் குடித்தேன்.

నేను నీరు త్రాగితిని.

ನಾನು ನೀರನ್ನು ಕುಡಿದೆನು.

ഞാൻ വെള്ളം കുടിച്ചു.

उत्तर/Answer .....

(6) **That child wants a ball.**

அந்தக் குழந்தை பந்து விரும்புகிறது.

ఆ బిడ్డ ఒక బంతిని కోరుచున్నది.

ಆ ಮಗುವಿಗೆ ಒಂದು ಚೆಂಡು ಬೇಕಂತೆ.

ആ കുട്ടി ഒരു പന്ത് ആഗ്രഹിയ്ക്കുന്നു.

उत्तर/Answer .....

(7) **He has finished writing a story.**

அவன் ஒரு கதை எழுதி முடித்தான்.

అతడు కథ వ్రాయుట ముగించి యున్నాడు.

ಅವನು ಒಂದು ಕಥೆಯನ್ನು ಬರೆದು ಮುಗಿಸಿದನು.

അവൻ ഒരു കഥ എഴുതി അവസാനിപ്പിച്ചിട്ടുണ്ട്.

उत्तर/Answer .....

(8) **All should learn Hindi.**

எல்லோரும் ஹிந்தி கற்க வேண்டும்.

అందరూ హిందీ నేర్చుకొన వలెను.

ಎಲ್ಲರೂ ಹಿಂದೀ ಕಲಿಯಬೇಕು.

എല്ലാവരും ഹിന്ദി പഠിക്കണം.

उत्तर/Answer .....

~~~~~

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,
~~~~~

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

गणतंत्र दिवस समारोह, 2018 - केन्द्र सभा, चेन्नई - कुछ झलकियाँ

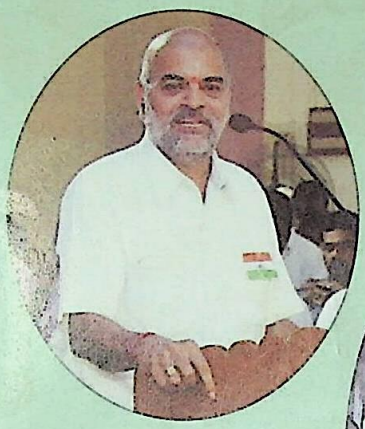

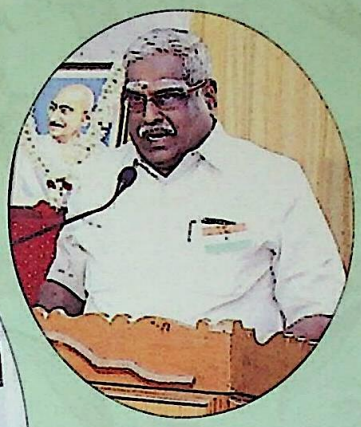

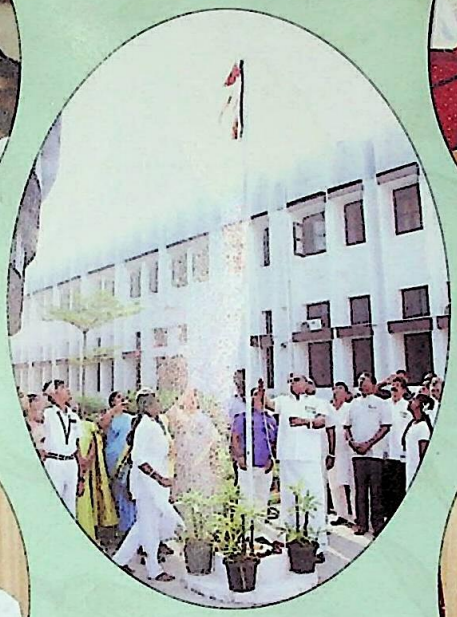

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,

Vaidika Pandit Sri V Hariharan Collection, Sholinganallur, Chennai

March, 2018. Regd. No. TN/CH(C)/321/2018-20
Licenced to Post without Pre-payment No.TN/PMG(CCR)WPP–432/2018-20
Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/67
Date of Publication – First week of every month
Posted at Patrika Channel on Dt. 9th March, 2018

REGISTERED NEWSPAPER

Hindi Prachar Samachar

Redirected to

m flats
ect, Annamvathi
Nagar,
in pet,
ammai.
-100

To

If not delivered, please return to:
Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,
15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 की ओर से एस. जयराज द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।
15-21, तणिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : एस. जयराज।
Published and Printed by S. Jeyaraj on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017.
Published and Printed at 15-21, Thanikachalam Street, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor S. Jayaraj.

CC-0.In Public Domain. Digitization by Muthulakshmi Research Academy,